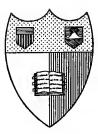
THE FOOTHILLS OF PAR.NASSUS JOHN KENDRICK BANGS

PS 10:6:4; B3F6



Cornell University Library

Ithaca, New York

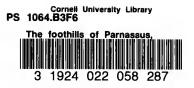
BOUGHT WITH THE INCOME OF THE

SAGE ENDOWMENT FUND

THE GIFT OF

HENRY W. SAGE

1891





The original of this book is in the Cornell University Library.

There are no known copyright restrictions in the United States on the use of the text.

http://www.archive.org/details/cu31924022058287

THE FOOTHILLS OF PARNASSUS

-

1

THE MACMILLAN COMPANY NEW YORK · BOSTON · CHICAGO · DALLAS ATLANTA · SAN FRANCISCO

MACMILLAN & CO., LIMITED LONDON · BOMBAY · CALCUTTA MELEOURNE

THE MACMILLAN CO. OF CANADA, LTD. TORONTO

THE

FOOTHILLS OF PARNASSUS

BY

JOHN KENDRICK BANGS



and the

All rights reserved

ES



A.374786

COPYEIGHT, 1914, By THE MACMILLAN COMPANY.

Set up and electrotyped. Publisbed February, 1914.

Norwood, Mass., U.S.A.

το

.

*

١

MARY GRAY BANGS

CONTENTS

| | | | | | | | | PAGE |
|----|-------------------------|------|----|---|---|---|---|-----------|
| | THE FOOTHILLS OF PARNAS | sus | • | • | • | • | • | 1 |
| IN | LYRIC VEIN: | | | | | | | |
| | FOR THE DULL AND DREAD | Y DA | Y. | | | | ٠ | 5 |
| | As to Honey | • | • | | • | • | | 7 |
| | On Being Good | • | • | • | • | ٠ | • | 8 |
| | COLOR-BLIND | • | • | • | • | • | • | 9 |
| | TO AN AMERICAN BEAUTY | | | • | • | | • | 11 |
| | ON & BALMY DAY IN FERR | UARY | | • | | | | 12 |
| | THE HAZARD | | | | • | | | 13 |
| | As to Love | | | | | | • | 14 |
| | A CHANGE OF HEART . | | | | | | | 16 |
| | A PROTEST | | • | • | | | • | 17 |
| | My Share | | | | | | • | 19 |
| | An Infallirle Receipt | | | | • | | | 20 |
| | TO A PASSING BREEZE . | • | | | | | • | 21 |
| | My Dog | • | • | | • | | • | 22 |
| | THE VERDICT | | | | | | | 24 |
| | THE INVITATION | | • | • | | • | • | 25 |
| | A HINT TO JULIA | | | | | | • | 26 |
| | THE FISHER-MAIDEN . | • | • | | • | | | 27 |
| | A DREAM | | | | | | | 29 |
| | MY STORES OF WEALTH . | | | | | | • | 31 |
| | Smoke-rings | | • | • | • | • | • | 33 |

vii

| | | | | | | | | P. | ÅGE |
|----|-------------------------|-------|------|----|---|---|---|----|-----------|
| | DAPHNE'S FOOT | | • | | | | • | • | 34 |
| | CUPID: BANKRUPT | | | • | • | • | • | • | 35 |
| | THE CONSOLERS | | | • | • | • | • | • | 37 |
| | LOVE, LAUGHTER, AND Se | ONG | • | • | • | | • | • | 39 |
| | JUNE | | | • | • | • | • | • | 41 |
| | THE LITTLE ELFMAN . | | • | • | | | | • | 43 |
| | THE ORIGIN OF THE KISS | | • | • | • | • | • | • | 44 |
| | LOVE'S DOMAIN | | | • | • | • | • | • | 45 |
| | PHYLLIS: DISCIPLINARIAN | | • | • | • | • | • | • | 46 |
| | THE ROAD TO ARCADY . | | | | • | • | • | • | 48 |
| | THE SONGS OF SPRING . | | • | • | • | • | • | • | 50 |
| IN | LIGHTER STRAIN: | | | | | | | | |
| | IN TROUTING TIME | | | | | | | | 55 |
| | THE NEW SPAN | | | | | | | | 57 |
| | THE KATYDIDS | | | | | | | | 59 |
| | ABCHERY | | | | | | | | 60 |
| | YE RIME OF YE KNIGHTI | LIE (| Cowa | RD | | • | | | 62 |
| | MAUD MULLER | | | | | | • | | 64 |
| | THE WISDOM OF THE SPE | INX | | • | | | | | 65 |
| | AT THE OPERA | | | | | | | | 66 |
| | A LEAP-YEAR DILEMMA | | | | | | | | 67 |
| | PEGASUS : HIS SINECURE | | | | | • | | | 68 |
| | THE END OF THE QUARK | EL | | | • | | | | 70 |
| | SIGHT SEEING | | | | | | | | 72 |
| | THE PLAINT OF UNCLE E | REN | EZER | | | | • | | 74 |
| | INCORPORATED | | | | | | | | 76 |
| | THE WISDOM OF SILAS . | | | | | | | | 78 |
| | TO FORTUNE : A PRAYER | | | | | | | | 80 |
| | THE UP-TO-DATE FARMER | 2 | | | | | | | 81 |
| | DIPLOMACY | | | | | | | | 85 |
| | THE WORLD, DR | | | | | | | | 89 |
| | | | | | | - | - | | 00 |

viii

| | THE JUNKMAN | ۹. | | | • | • | • | • | | | page 91 |
|----|--------------|-------|-------|------|-----|---|---|---|---|---|------------|
| | FISHIN' . | | | | | • | | • | | | 93 |
| | On a Stormy | MAN | -DAX | r | | | | | | | 95 |
| | A-E-I-O-U | • | | | | | | | | | 96 |
| | A CONFESSION | ۲. | | | • | • | • | | | | 98 |
| | A LEGEND OF | тне | STRA | ND | | | | • | | | 99 |
| | As to LINEAG | 3E | • | | • | | • | | | | 101 |
| | THE PRANKSO | ME N | Iuses | | | • | • | • | • | • | 102 |
| | FATE . | • | • | • | • | | • | • | • | | 103 |
| | THE SPECIALI | 878 | • | | • | | • | | | • | 104 |
| | PHYLLIS AT T | не С | USTON | a Ho | USE | | • | • | • | • | 106 |
| | THE CURRICU | гом с | of Lo | OVE | • | | • | • | • | | 108 |
| | | | | | | | | | | | |
| TE | IE DEEPER 1 | OTE | : | | | | | | | | |
| | THE DEEPER | Note | • | • | • | • | • | • | • | • | 113 |
| | THE ROSE | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 114 |
| | IN ABSENTIA | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 115 |
| | THE WAITING | Inst | RUME | NT | • | • | • | • | • | • | 116 |
| | MIRACLES | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 117 |
| | THE DREAMER | R | • | • | • | • | • | • | • | • | 118 |
| | A LOVE SONG | ł. | • | • | • | • | • | • | • | • | 119 |
| | TO TIME . | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 120 |
| | BETTER THAN | Goli | D | • | • | • | • | • | • | • | 121 |
| | As to Yester | RDAY | • | • | • | • | • | • | • | • | 122 |
| | A VISION OF | Loss | • | • | • | • | • | • | • | • | 123 |
| | As to Other | Wor | LDS | • | • | • | • | • | • | • | 125 |
| | My Allies | | • | • | • | • | • | • | • | • | 126 |
| | INSPIRATION | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 128 |
| | On Lincoln's | BIRT | THDAY | r. | • | • | • | • | • | • | 129 |
| | IN JULY . | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 130 |
| | THE TASK | • | • | • | • | • | • | • | • | • | 131 |
| | THE FOUNT OF | f Sob | ſĠ | • | • | • | • | • | • | • | 132 |
| | | | | | | | | | | | |

| Тне Роет | | | | | | | | page 133 |
|-----------------------|-----|---|---|---|---|---|---|-------------|
| | | • | • | • | • | • | • | 134 |
| IN THE MONTH OF FEBRU | | | • | • | • | • | • | 134 |
| WHEN SPRING DAYS COM | Е | • | • | • | • | • | • | |
| THE LIGHTED WAY . | | • | • | • | • | • | • | 137 |
| THE THIEF | | • | • | • | • | • | • | 138 |
| "THE HYPOCRITIC DAYS' | • | • | • | • | • | • | • | 139 |
| SIR KINDLY-THOUGHT . | | • | • | • | • | • | • | 140 |
| THE POET'S GRAVE | | • | • | • | • | • | • | 141 |
| A FIRESIDE FANCY . | | • | • | • | • | • | • | 142 |
| THE JOY OF LIVING . | | • | • | | | • | • | 143 |
| TRANSPLANTED | | • | | | | • | • | 144 |
| THE SOUTHRON MESSENGE | R | • | | | | | • | 145 |
| Максн | | | • | • | | • | | 146 |
| THE ALTERNATIVE | | • | • | | • | • | | 147 |
| A WOODLAND EASTER . | | • | • | | • | • | | 148 |
| NATURE'S COMFORTERS . | | | | | | • | | 149 |
| THE CATCH | | | | | | • | | 150 |
| THE SUNNY SIDE | | • | | | • | | | 151 |
| THE HERITAGE | | | • | | | • | | 152 |
| THE SONG OF THE ROSE. | | | | • | | | | 154 |
| THE WEALTH OF THE RO | AD | | | • | | | • | 155 |
| Humor | | • | | | | | • | 157 |
| THE LIGHT OF LIGHTS . | | | | | | | | 158 |
| AS TO FEAR | | | | | | | | 160 |
| THE EVER YOUNG | | | | | | • | | 162 |
| PLODDIN' ALONG | | • | | | | | | 164 |
| THE GREENER BAY | | • | | | | | | 165 |
| THE JOYS OF RHYME . | | | | | | | | 166 |
| THE SEEING EYE | | • | | | | | | 168 |
| THE GATEWAY | | | | | | | | 169 |
| THE CROWN OF WASHING | TON | | | | | | | 170 |
| THE BLESSED BLIND . | | | | | | | | 171 |
| | | • | - | - | • | - | • | |

| | | | | | | | | | PAGE |
|------------------|------|------|------|---|---|---|---|---|------------|
| To Mark Twain | • | • | • | • | • | • | | | 172 |
| THE AFFINITIES | | • | | | • | • | | | 173 |
| TO THE MUSE IN . | AUTU | MN | | | | | • | | 174 |
| Сті Воно? . | | | | | | | | | 175 |
| SHAKESPEARE'S BI | RTHD | Y | • | | | | | | 176 |
| As to the Law | | | | | | | | | 177 |
| 'TWIXT FACT AND | FANC | Y | | | | • | | | 178 |
| MUSIC | | | | | • | • | | | 179 |
| THANKSGIVING DA | Y. | | | | | | | | 180 |
| SERVICE | | | | | • | • | | | 182 |
| JOY SHARING . | | | • | | • | | | | 183 |
| REPAYMENT . | | | | | • | | | | 184 |
| My CREED . | | | • | | | • | | | 185 |
| THE SUMMONS . | | | • | | • | | • | | 186 |
| GETTYSBURG FIFTY | YEA | RS A | FTER | | | | | | 187 |
| PROFIT AND LOSS | | | | | | | | • | 190 |
| ON & RAINY DAY | IN A | LIBR | ARY | | | | | | 193 |
| S.O.S | • | | • | | | | | | 196 |
| | | | | | | | | | |

For permission to reprint some of the poems contained in this volume the author is indebted to the courtesy of the editors and publishers of *Munsey's Magazine*, *Harper's Magazine*, *The Century Magazine*, *Scribner's Magazine*, *Harper's Weekly*, *St. Nicholas*, and *Life*.

THE FOOTHILLS OF PARNASSUS

| I MAY not hope to scale the loftier heights, |
|---|
| Full well I know ! |
| Yet are there foothills with their rare delights, |
| And slopes below |
| Whereon a modest singer slight of skill, |
| And void of art, |
| May roam, and sing such measures as he will |
| From out his heart. |
| |

About him run the clearly blazoned ways That still resound With echoes of the songs that won the bays Of Poets crowned, And now and then if he but linger there His soul may hear Some note of beauty from those Singers rare Of Yesteryear !

IN LYRIC VEIN

WHEN the frost is on the heather And the skies are dark and grim, And the bleak and wintry weather Makes the light of Heaven dim, None the less my soul rejoices. For I have a little way Of reserving bits of sunshine For the dull and dreary day ---Little bits of sunny hours, Little rifts of golden light; Little hints of summer flowers Will illumine any night. Tiny bits of playful fun-beams Will light up your weary way, If you'll only save your sun-beams For the dull and dreary day!

When the cares of life befall me, And the clouds above hang low, There is nothing to appall me As along my way I go. Every trouble, every sorrow, Like the sea-mists fades away When you've saved your bits of sunshine For the dull and dreary day —

For the Dull and Dreary Day

Little glints of gleaming treasure, Little hints of mellow sheen; Matters not how small the measure — Hold the spirit fresh and green. Little rays like elfin-spun-beams Full of frolic and of play, Come to him who saves his sun-beams For the dull and dreary day !

.

AS TO HONEY

For honey some prefer the bee, But that is not the kind for me; Though I admit the bee is fine When working in the honey line, And none denies the product's sweet With tea, and cakes, and bread to eat.

The drop of syrup from the rose, The sweets the heliotropes disclose, The luscious drafts from hollyhocks, From lilac and the golden phlox, From honeysuckle, violet — Ambrosial all — and yet — and yet —

When radiant Chloe casts her eye On me with glances soft and shy, And then, when no one's near to see, Turns quickly and — well, kisses me — No floral sweet the Queen Bee sips Compares with that of Chloe's lips.

ON BEING GOOD

IT is not easy to be good At all times as one really should. Temptations lie on every hand That only saints can well withstand. E'en though to virtue one's inclined Old Satan will not stay behind.

One thing, however, is quite sure — In one Commandment I'm secure Since Daphne came to live next door I find it difficult no more — Stop laughing, Cupid ! Naughty Elf ! — To love my neighbor as myself !

COLOR-BLIND

I'M color-blind as I can be, I know not red from green. I could not tell an amber sea From one that's plain marine. I could not tell you if you asked the color of my ink. But well I know, though blind I be, that Daphne's cheek is pink !

When sunset paints the evening skies In wondrous symphonies, And all the prism seems to rise From out the misty seas. I know not one from t'other, but I need not e'er be told Despite this awful blindness that my Daphne's hair is gold !

When autumn comes upon the scene And with her frosty brush Turns all the tender summer green On hedge, and tree, and bush, To gorgeous, flashing hues that seem by Titian's genius spread, I know it not, but I can see that Daphne's lips are red !

Color-Blind

And when the broad and kindly dome Of heaven rears above, And speaks of that supernal home Where dwells eternal love, They tell me it is azure, and I know they tell me true, For love dwells deep in Daphne's eyes, and they are azure too !

TO AN AMERICAN BEAUTY

My love's a rose, A perfect flower. Her beauty grows With every hour.

And when she smiles, A fragrance rare My heart beguiles With visions fair.

And when she pouts At me forlorn, I have no doubts About the thorn !

ON A BALMY DAY IN FEBRUARY

O SLY, light-fingered Februaire, You'll be in trouble soon ! I've watched you with a deal of care, And seen you lure, purloin, and snare, A day from May, and here and there A bit of early June !

THE HAZARD

HE dared not ask a kiss For fear that she'd not brook it, But, eager still for bliss, He boldly went and took it.

And now he's unaware If she did like or spurn it, For she, right then and there, Compelled him to return it !

AS TO LOVE

"TIS said that Love when all is done Is but "Two Hearts That Beat As One," — Which I deny, for I have found When Love to visit me comes round The moment he comes through the door He makes my heart beat like ten score, And even more !

If I were teaching Love at school, And to define it I were tasked, I'd say That 'tis an element, by no means cool, That comes our way, Both night and day, Unsought, unasked, And as a rule Makes Man a Hero or a Fool, And best of all it is so rich He cares not which !

How shall I know him when we meet? Good lack, the answer is complete — Sunshine or storm The symptoms are, Heart overwarm, A shivering spine, and truly Arctic feet!

As to Love

How tell one's Love? Ah, it were well If so you rest beneath its spell To let its gold Remain untold, For Love's a special kind of pelf That soon or late must tell itself. Yet if it must be told, why then Intrust it not to tongue or pen — The better plan, O Lover faint but true, Is just to let your two eyes speak for you.

A CHANGE OF HEART

By day a bird I'd be, And soar the heavens high with songs of glee, But when the night doth fall, And dreamy thoughts begin to call, And birds that sing Sleep with their heads beneath their wing, Or in some frigid barn do woo repose

With only wisps of straw to warm their toes, Or sink to rest

In some unroofed, uncomfortable nest, I change my mind, and am content to be Me !

A PROTEST

HI, Nature ! Here's a word or two, Flirtatious Dame, I'd have with you Anent the way you twist and tack About the patient Almanac, And disarrange the Zodiac.

On Monday it was winter drear; On Tuesday all the atmosphere Betokened spring, and Wednesday morn, In minor key, and quite forlorn, We got a note from autumn's horn.

On Thursday there was summer glow In sundry breezes that did blow Across the fields, yet Friday noon Until the rising of the moon Once more old winter sang his tune.

On Saturday 'twas spring again, And I took out my fountain-pen To write about the vernal pink, But ere I had a chance to think Back winter came and froze my ink ! c 17

A Protest

Now truly, Madame, I feel hurt To note how giddily you flirt! Pray have you heard — or haven't you? — That ancient proverb tried and true About the old love and the new?

MY SHARE

THE Poet sings her Buckled Shoe — I much prefer her eyes of blue !

The Poet sings the Cup she sips — I much prefer her smiling lips!

The Poet sings her Girdle chaste — I much prefer her lissome waist !

The Poet sings her Locks aglow — I much prefer the face below !

The Poet glorifies her Glove — I much prefer the hand of Love !

The Poet hymns her waving Fan — The cheek behind it suits my plan!

The Poet sings her frills of Lace — I much prefer their resting place !

So, Poet, take the Fan, the Shoe, The Laces, and the Girdle too.

Take thou the Gloves, the sweetened Cup — I give them freely wholly up.

I'll never seek such flimsy pelf When I can have the Maid herself !

AN INFALLIBLE RECEIPT

I've had to-day a pleasant whim Of how to keep the heart in trim, And running o'er with purest joy: One day each week, become a boy! Drop toil, and trouble, care, and woe, And back to boyhood once more go — Unless, perhaps, you chance to be A woman — then the recipe Is much the same: give o'er the whirl Of present things, and be a girl!

TO A PASSING BREEZE

STAY, little Breeze, I prithee stay ! Come snuggle down, no longer stray. There's sultry days in store for me. And I would make a trade with thee. Stay here and serve me in my need And on sweet rose-leaves you may feed. I'll keep a silvery stream at hand To sing to you at your command. I'll let you hum around the eaves, Or flirt among the maple-leaves, And if you'd like to roam at will Among the pine trees on the hill You've but to say so — and the bees Will bring you honey when you please, If through the summer you will rest Right here with me, an honored guest, With naught to do but blow about Me when the summer sun is out.

MY DOG

I HAVE no dog, but it must be Somewhere there's one belongs to me — A little chap with wagging tail, And dark brown eyes that never quail, But look you through, and through, and through, With love unspeakable, but true.

Somewhere it must be, I opine, There is a little dog of mine With cold black nose that sniffs around In search of what things may be found In pocket, or some nook hard by Where I have hid them from his eye.

Somewhere my doggie pulls and tugs The fringes of rebellious rugs, Or with the mischief of the pup Chews all my shoes and slippers up, And when he's done it to the core With eyes all eager pleads for more.

Somewhere upon his hinder legs My little doggie sits and begs, And in a wistful minor tone Pleads for the pleasures of the bone — I pray it be his owner's whim To yield, and grant the same to him.

My Dog

Somewhere a little dog doth wait, It may be by some garden-gate. With eyes alert and tail attent — You know the kind of tail that's meant — With stores of yelps of glad delight To bid me welcome home at night.

Somewhere a little dog is seen, His nose two shaggy paws between, Flat on his stomach, one eye shut Held fast in dreamy slumber, but The other open, ready for His master coming through the door.

THE VERDICT

PUCK, a-sitting on a hill, Spied two lovers by the rill,

Doing things that lovers do

When their love is fond and true; Just a pressure of the hand, Flash of eyes — you understand. Glancing toward the couple, he

Cried, "What Fools these Mortals be !"

Later on he spied a pair — Strephon strong, and Phyllis fair;

Deep affection in each heart,

Yet their ways ran far apart. He'd no courage for the test. She deemed coldness for the best.

Puck observed, impatiently:

"O what Fools these Mortals be !"

I don't know what can be done For to please this jeering one.

If we do or if we don't;

If we will or if we won't; Spite of how we play the game Still the verdict is the same.

Hard to such a Fate to bow — Guess we're all Fools anyhow !

THE INVITATION

Соме, Phyllis, to the countryside As Strephon and his Chloe hied Let you and I Now quickly hie; And there, amid the clover gay, And the wild-flowers on the way, Beneath the green of arching trees, To the rare music of the breeze, Mixed with the songs of happy birds, And the far crooning of the herds, The sunbeams in their golden rout All playing joyously about,

With all the scene A-glint with sparkle and with sheen, I'll show you how the true Bee sips His honey from the Rose's lips,

And with their sweets His bliss completes.

You be the Rose, and I, you see, — Well, Phyllis dear, I'll be the Bee!

A HINT TO JULIA

"When as in silks my Julia goes, Then, then methinks how sweetly flows The liquefaction of her clothes."

-HERRICK.

WHEN as in silks MY Julia goes, Adorned with costly furbelows, The which add to her stately air And make her fairest of the fair, My heart beats high, and I confess To deep and passionate distress. But all the same I turn aside — I can't afford so rich a bride!

For pressing economic laws Conspire to give my passion pause. The cost of living is so great I can't afford the wedded state, When plus the rent, the bread, the milk, I'd have to pay for all that silk — But I'd propose if Julia'd go For just a while in calico !

"The liquefaction" 's fair to see, But "liquidation" bothers me !

THE FISHER-MANDEN

I saw a maid down by the sea, And she was fishing merrily. Her eye was blue, her cheek was fair, The glint of sun lay in her hair; She cast her hook with jocund air,

And laughed with glee At all the fish that were to be.

And I laughed too, For well I knew No fish were in that special cove Wherein she sought her treasure-trove; For maids had fished that spot before, For years galore, And ne'er a fin had e'er emerged From where those waters ebbed and surged. I laughed at the futility Of fishing thusly in that sea, And as my roar Broke on the shore She turned and cast at me a glance — 'Twas now direct, and now askance —

And then and there

That maid so fair

That fished with such a jocund air,

The Fisher-Maiden

Made such a catch As you would find it hard to match; For don't you see The fish she caught was simple ME!

Moral:

Don't laugh at maids down by the sea If they be fishing fishlessly, Lest it shall chance by some odd crook Of Fate yourself shall get the hook, And more or less Land in a mess, As I did there The while she fished with jocund air And let the warm sun kiss her hair !

A DREAM

DREAMED last night that Washington, Hamilton and Jefferson,

Came to visit me. Lincoln came along likewise — O those grave and kindly eyes ! — With the other three.

I was much disturbed at first In such company immersed.

Knew not what to say. Seemed as though the gods had come On a visit to my home.

Wondered if they'd stay.

Felt as if four statues great
Full of pomp and regal state
Sat about the room.
Got as nervous as a cat
Wondering what they were at —
Soul was full of gloom.

But as moments passed along Felt my spirits growing strong. Mr. Lincoln laughed. Hamilton joked Washington, Washington joked Jefferson; Each the other chaffed. 29

A Dream

Lincoln slapped me on the back. Hamilton gave me a whack. Washington he grinned. Jefferson got off a joke; Gave my ribs a gentle poke As we sat and chinned.

Finally, when it was o'er,
And they vanished from my door,
He of Valley Forge,
As he put his chapeau on
Winked, and whispered, "By-by, John !" I said, "Good-bye, George !"

Sort of felt that that queer dream Gave my soul a pleasant gleam Through the mists that blind.

Really great men after all Live not on a pedestal Far above their kind;

Live not from their kin aloof Using heaven for a roof, Full of pomp and fuss, But are full as they can be Of a real Humanity Like the rest — of us ! I RECKONED up my wealth last night, And found, to my surprise, That I'm a millionaire all right, Though maybe in disguise. To look at me, I must confess, No person sane would ever guess I ranked among the wights that hold A wondrous store of gold.

The list of my securities ? Well, first of all put down A taste for the simplicities — Possession rare in town. I get along on simple things, And care naught for the pomp of Kings, And in the quietest of ways Prefer to pass my days.

1

Next I've abundant appetite;

Digestion strong and good, And three times daily take delight

In sitting at my food — The which a billionaire I know Would pay a million down or so If he could have it for himself Instead of all his pelf.

My Stores of Wealth

And finally one item small With sparkling eyes of brown Who shares with me what may befall

If Fortune smile or frown; Who bids me never to repine Whatever pain or care be mine, And daily makes me Master of

A blesséd world of Love !

SMOKE-RINGS

WHEN Phyllis took up cigarettes I must confess to some regrets To see the smoke-clouds float above Those lips so fit for deeds of love: And for awhile, let me admit, I fussed and fumed about a bit. And prayed by all the smiling stars She'd never take up strong cigars.

But as I watched the airy grace With which she smoked, and how her face Lit up with joy when fairy rings Went flying off on misty wings; And noted too how daintily She rolled a cigarette for me, I ceased to fuss, and fume, and choke, And let my wrath go up in smoke.

And now together as we stray Along life's pleasant primrose way We send forth little rings that rise In linkéd chains up to the skies — One ring from her, one ring from me, Thus are they linked alternately ---A token proving with what art We've each acquired the "Smoker's Heart." 33

DAPHNE'S FOOT

FAIR Daphne's foot's a dainty thing, Like those the poets used to sing. So small is it you'd hardly dream It had sufficient breadth of beam To bear the weight, however slight, 'Twas made to carry, day and night.

When out upon the ball-room floor You see it gayly tripping o'er The polished surface in the dance, You wonder greatly if perchance The elfin fairies of the moon Have not prepared her dancing shoon.

When o'er the cold bleak pave it goes 'Mid hustling throngs, and drifting snows, You stand aghast that such a rare And fragile thing should venture there, And as it nears the crossing's edge You tremble at such sacrilege !

But O that foot ! What things I've said ! What thoughts unspeakable and dread — When to the Opera I'm inclined, And Daphne sitting just behind Inserts her toe 'neath where I sit And all unthinking wiggles it !

CUPID: BANKRUPT

"TIS sad, sad news I heard to-day — Dan Cupid's fled the town; His bank has closed, and in the fray Of failure has gone down.

For years poor Danny's kept the place, And honored every bill From men of every creed and race Presented at his till.

But now the bank has closed its doors — A scene of misery; And Cupid's skipped to other shores In hopeless bankruptcy.

He had a vast reserve of love Hid safely in his vault; There never was suggestion of A possible default.

He owned a mine of richest ore — True eighteen carat stuff — And none who ever glimpsed the store Could doubt he had enough.

Cupid: Bankrupt

But I, alas, yes, it was I Who wrecked our banker fair; It is a fact I can't deny — I wrought that ruin there.

For when I first glimpsed Polly's eyes, And fell beneath their sway, I drew a draft of such a size He simply couldn't pay ! WHEN Mistress Mab averts her eyes And turns her face away from me,
And views with an assumed surprise My heart's impetuosity,
I do not sit apart and mope,
And yield to fruitless lamentation
Like one bereft of every hope,
For Phyllis is my consolation.

When Phyllis looks with cold disdain Upon my wooing, and avers
All hope to win her hand is vain Because some other she prefers,
You'll find me not downcast with woe," A sufferer from love's prostration;
I merely take my hat and go To Daphne for my consolation.

And then when Daphne tells me nay — She likes me well, but that is all,
And hopes that in a friendly way I'll still keep up my weekly call,
Think you I sit around and grieve The finish of that sweet flirtation ?
Not I ! I run around to Eve To find my meed of consolation.

The Consolers

When Eve denies she ever meant To give me reason to suppose
She ever loved to such extent She'd share my daily joys and woes,
No tears ooze from these eyes of mine, Nor do I yield to dissipation,
I seek out Susan's eyes divine And in them find my consolation.

So runs the tale. When dainty Sue Frowns on my suit no dull regret Fills up my days, for there are Prue, And Maude, and Polly, and Babette, And Jane, and Sarah, Betsy and A never-ending congregation. God placed fair maids on every hand To fill the world with consolation.

LOVE, LAUGHTER, AND SONG

I'm going to laugh, I'm going to laugh, I'm going to laugh, Ha-ha !
E'en though the harvest be but chaff, I'm going to laugh, Ha-ha !
For laughter fills the heart with joy, And kills the troubles that annoy, And brings to age hopes of the boy — Ha-ha !

I'm going to sing, I'm going to sing, I'm going to sing, Tra-la ! In face of sneer, and jeer, and fling, I'm going to sing, Tra-la ! For numbers rout the hosts of wrong, And fill the spirit with a throng Of joyous thoughts the whole day long — Tra-la !

I'm going to love, I'm going to love, I'm going to love Alway, 39

Love, Laughter, and Song

And thus I'll win life's treasure-trove — I'm going to love For aye ! For love spreads sunshine through the air, And shields the soul from pain and care,

And spreads joy's largesse everywhere We stray.

Love, song, and mirth — these are the three Great blessings of this earth for me, And that is why the whole day long I love, and laugh, and sing my song !

4

JUNE

JUNE'S a-comin' ! June's a-comin' ! · Comin' right along !

I can hear the bees a-hummin' chock-a-block with song ! I can hear the birds a-floppin', And the rosy buds a-poppin', While the blossoms white are droppin' In a snowy throng !

I can hear the bells a-ringin' in the steeples high Tellin' how young Love's a-wingin', laughter in his eye, As the brides and grooms a-smilin' Walk the primrose way beguilin', In their dreams of bliss a-whilin' Honeyed hours by !

On the pike the tramps are trampin', void of every care, Ready for whatever campin' turns up anywhere. All around the lambs are blattin' Like a lot o' kids a-chattin', And as soft as fairy satin Grows the mornin' air !

Dearest June I want to tell yer, you're the best there be ! When I see, or even smell yer, soul is full o' glee ! And no single day that passes But the thought o' greenin' grasses, Lovin' lads, and lovin' lasses, Thrills the heart o' me !

June

Love's the word, and Love's the token, burden of our tune;

Trademark ever true, unbroken, mornin', night, an' noon.

> Love, and Life, and merry Laughter, Echoin' through wood and rafter — Naught before, ner nothin' after Ever touches June !

THE LITTLE ELFMAN

V

I MET a little Elfman once, Down where the lilies blow.

I asked him why he was so small, And why he didn't grow.

He slightly frowned, and with his eye He looked me through and through — "I'm just as big for me," said he, "As you are big for you !"

THE ORIGIN OF THE KISS

HE saw her lips and deemed them roses fair. A flower he strove to pluck, and it was this — I have it from a fairy who was there And saw it all while peeping from his lair — Gave first to man that perfect flower of bliss The Lover's kiss !

LOVE'S DOMAIN

For Government Republics I would choose, Wherein the Star of Liberty doth shine; Where equal rights for all are all men's dues, And every man's a King by right divine!

But when it comes to Love — Autocracy ! Avaunt, ye Brotherhoods ! Ye are but vain ! No equal rights in Chloe's heart for me — I'd be the Czar of all that fair demesne !

PHYLLIS: DISCIPLINARIAN

PHYLLIS hath the strangest way When from rectitude I stray Into some by-path of sin Of bestowing discipline.

Not a syllable of blame ! Not a scorching glance of flame ! Not a word, and not a look Comes to summon me to book —

But, alas — oh, how it burns ! — Straight to otherward she turns, And for all that I can see Never seems aware of me.

It is quite as though I were In a world apart from her; On some planet void of mirth Countless leagues away from earth.

Or as if — if there at all — I were such an atom small That nobody'd be aware Of the fact that I was there.

Phyllis: Disciplinarian

Then, when I wax penitent, 'Neath this lashing punishment, Her forgiveness is so sweet That my lapse I oft repeat !

'Tis so blissful being shriven That I sin to be forgiven!

THE ROAD TO ARCADY

Now tell me where is Arcady, is Arcady, is Arcady ! Now tell me where is Arcady, for that is where I'd be ! Is it beyond that golden line That dazzles so these eyes of mine, Far o'er the western sea ? Or is it over yonder height Whereon the sun is gleaming bright, And smiling happily ? I've sought it, O this many a year — I've sought it far, I've sought it near,

In days of joy, in days of drear — My well-beloved Arcady !

O Pilgrim fair to Arcady, to Arcady, to Arcady,

O Pilgrim unto Arcady, I'll point the way to thee ! Seek thou two deeply sparkling eyes With hues as soft as summer skies,

And full of love and glee. Two eyes that sparkle with delight, And at your coming glisten bright And twinkle merrily.

For in their depths you'll find the way To golden scenes and pastures gay, To bowers where the love-birds play In an enchanted Arcady !

The Road to Arcady

O traveller to Arcady, to Arcady, to Arcady, O traveller to Arcady, take heart indeed from me ! The road to Arcady is not Along some dusty highway hot, And full of misery; "Tis not a pathway drear, forlorn, With weary stretch, and full of thorn, Beyond some distant sea.

> But where there's love 'twixt man and maid, A love that cannot die, nor fade, You'll find the golden highway laid That leads to Arcady !

I

THE silver brook came babbling down From yonder hill-top's snowy crown, And as he danced along He filled the air with song; Right merrily He sang, and thus sang he: "The spring is here ! The path is clear For me to course my way Thro' woodland shade, And ferny glade, And o'er the mosses play; To dance and prank Thro' flowery bank, Down to the river free. My heart's elate. For there doth wait The bride who loveth me, Who'll sing The gladsome songs of spring !"

II

The happy bird came flying North ; Out of the Southland came he forth,

The Songs of Spring

And as he winged his way He sang his roundelay. Right joyously He sang, and thus sang he: "The spring hath come. And winter numb Hath sought his arctic home. The cherry-tree Hath sweets for me. And blossoms frolicsome. The forests deep So long asleep Now echo to the rhyme Of chaps like me Who've longed to see The joyous Mating-time. And sing The gladsome songs of spring !"

III

The little bud came peeping out To see what it was all about, And when he spied the sky His song went rising high. Right daintily He sang, and thus sang he: "The days are soft, The sun's aloft, And soon will come the May. 51

The Songs of Spring

In dainty hues In pinks and blues We'll decorate her way. With burgeoning Of petalled wing, We'll make her pathway sweet. We'll fill the air With fragrance rare Of roses at her feet, And sing The gladsome songs of spring !"

IN LIGHTER STRAIN

Now what care I for politics And all their mad and foolish tricks,

And demagogic spouting? We've reached the time of year so glad When men can drop the woe and gad Of daily cares and go, my lad,

With rod and reel a-trouting !

Let business cares be what they may, Let happen what may hap to-day

In all this world of doubting — I have no care, for free am I To take my rod, my reel, and fly, And to the distant rillets hie

To ease my soul in trouting !

Prue may be cross, and Bess unkind, But naught I care ! I shall not mind

Their frowning and their pouting. But from the social whirl I'll slip And to the vales and hillsides skip, And pool, and pond, and brooklet whip, In gay and joyous trouting.

The rod, the reel, the hook, the line, And leafy ways and fish for mine !

In Trouting Time

I'm off upon my outing, 'Mid byways peaceful and serene Up in the hills so softly green Where trouble never shows his mien The while I'm at my trouting !

THE NEW SPAN

"Scientists now declare that the ultimate span of man's years will be a hundred and fifty."--- Daily Paper.

IF this the truth turns out to be O what a lot of things we'll see 'Twixt now and mid-next-century ! A subway built to Liverpool Beneath the ocean deep and cool, All made of glass that we may view The mysteries beneath the blue !

An air-ship running to the moon Where lovers all may go to spoon, Its climate always May or June ! And possibly a branch to Mars, And all the other smiling stars, And for the chaps a-motoring A speedway built on Saturn's Ring !

New patent wings that we may fly At will across the spreading sky, Far up above the mountains high, Without a fear we'll bump our nose Upon the peaks, or stub our toes On jagged cliffs, or glacial heights — A pastime glad for summer nights !

The New Span

Cares all abolished ! Woe a dearth ! And for a nation full of mirth, UNITED STATES OF ALL THE EARTH ! And all the navies of the world Beneath the Red Cross Flag unfurled, Devoted to the Fresh Air Tots, Whose hard-worked parents own no yachts !

A time that's glad, a time that's good — A Universal Brotherhood, When nobody's misunderstood ! A sort of general Christmas-tide, With just Good Will on every side — If these are things that are to be, Bring on the years ! They'll do for me !

THE KATYDIDS

I WISH some Sage, some Philosophic Cid, With knowledge of the facts, or some invention, Would tell us what it was that Katy did That causes all this eventide contention. It must have been some very awful thing, Some naughty deed of wickedness immortal. The way the Dame's posterity doth sing About it every eve around my portal. At set of sun th' affirmatives begin. Yet bring no evidence to help the trial. Then t'other side for the defence out in An everlasting chorus of denial. And so it goes. They keep it up all night, All thoughts of rest, or hope of verdict scorning, With ne'er an end of any kind in sight When routed from the forum by the morning.

It seems to me a foolish sort of row,

And sad to see so many thousands nettled, When if we knew the charge perhaps somehow

It might be compromised or wholly settled. At any rate I'm full of charity,

And all the shrieking crew can count upon it Until the charge and proofs are brought to me

I shan't believe that Katy ever "done" it !

ARCHERY

"ARCHERY'S come in again !" So the Sporting Writers shout. I should like to know just when Archery was ever out. Long as I have been alive Archers bold and archers fair Have been ruthless with the drive Of their arrows everywhere.

There is Polly — archery
Is her best accomplishment.

Scores a bull's-eye clear and free
Every time her bow is bent.
True, an arrow seldom flies
When the lady snaps the chord —
She just merely lifts her eyes
And the hit is duly scored.

Then Myrtilla — you should see
Fair Myrtilla take a shot !
Makes her hits three out of three,
Not a miss in all the lot.
Myrtle's arrows they are smiles,
Sped to pierce the human heart —
She, like Polly, uses wiles
Substituted for the dast

Substituted for the dart.

Archery

Daphne too is champion In the arts of archerv. She's a marvel on the run Where the best of archers be. Not a target in the world But doth score when Daphne shoots, Though no arrow e'er is hurled — Glances are her substitutes. 'Ware these archer maids. O man ! They are too expert for you. Watch and ward you if you can, For their aim is deadly true. You may think yourself the "beau" In this little shooting game, But you'll find before you know You're the target just the same !

- "I WILL never love a coward !" quoth the Lady fair and bright.
- "Then you'll never love at all, Ma'am," answered her the doughty Knight.

"Sometimes we know not where or when

You'll surely find the best of men

His back against the wall ! His noble heart distraught with fear, The cry of foemen in his ear, Who fights with savage lunge and leer Because he feels that death is near

And does not dare to fall !

"Sometimes we know not when or where The coward lurks beneath the air

Of knightliest cavalier. Whatever things he seems to dare Spring not from courage, tried and rare, But that some doubting lady fair

May not suspect his fear.

"The wight who never feared a space Belongs not to the human race. He never lost, he never won; Great deeds of might he may have done,

Ye Rime of Ye Knightlie Coward

But no achievement of the heart Has ever fallen to his part; And no one enters perfect bliss Who has not tasted cowardice, As I now taste it, standing here, Too cowardly, too filled with fear, To throw Love's gauntlet down and dare Your Ladyship, so loved, so fair, To pick it up and face with me The Tourney of What Is To Be !"

Whereon the Lady, 'spite of what she'd said Herself the gauntlet threw straight at his head, And later on, I'm told, they twain were wed.

"The way it came about," quoth she, "was this: None but the Brave confess to Cowardice; And I have always prayed my Lord might be A Knight to others, but — afraid of me !"

MAUDE MULLER

MAUDE MULLER on a summer's day Out in the meadows raked away.

The Judge came by just as of yore, But when he gazed the meadows o'er

In search of Maude, so sweetly fair, Was not aware that she was there,

And so with spirits much cast down Kept sadly on his way to town.

The trouble was, the maid's new hat She wore that day out on the flat

Loomed up so large both front and back The Judge mistook it for a stack,

And never knew the lady gay Was not another load of hay.

.

THE WISDOM OF THE SPHINX

I SOUGHT the Sphinx and asked advice On how to woo a heart of ice. She sat in silent majesty And ne'er a word vouchsafed to me, But with a cold and vacant stare In frigid stillness rested there; But soon her answer cleft my pate — Her pose replied, "IN PATIENCE WAIT!"

"How shall I circumvent," quoth I, "The rival who is always nigh. And fills my anxious soul with fear Lest he shall win what I hold dear?" I pleaded hard, and still the same Deep silence for my portion came; Yet soon I saw, to my delight, The answer was, "SIT TIGHT ! SIT TIGHT !"

Again, encouraged, I drew near And whispered in the Sphinx's ear: "What need I most to win Babette. On whom my doting heart is set? What quality of strengthful men Must I acquire to hope again ?" Her glance went speeding o'er the land, And there I found my answer — "SAND !" 65

F

AT THE OPERA

AYE, truth you speak, and I the words repeat — The music at the Opera was sweet. I've listened to the lowing of the herds, I've sat enthralled by measures of the birds. I've heard the lilt that penetrates the vale When falling twilight spurs the Nightingale To songs as sweet as ever those that ring Through Heaven's streets when happy Angels sing.

Yet none of these hath ever seemed so rare As those sweet measures, tuneful past compare, That fell upon my listening ears last night, And filled my soul with rapture and delight. What Opera was it? Well, I cannot say If it were Wagner, Verdi, or Bizet — The music I refer to was the chime Of Daphne's voice a-babbling all the time.

A LEAP-YEAR DILEMMA

Now what the dickens shall I do? I bring my cry for help to you — On every side deep woe besets; My heart runs over with regrets, For I'm the kind of chap, I trow, That never learned to answer "No!"

Whate'er a maiden asks of me, No matter what the favor be, I always promptly answer "YES," And hence hath risen my distress — Distress indeed of such a kind That it has nearly wrecked my mind.

Last week I called on fair Babette, On Susan, Bess, and dear Janette; On Genevieve, Matilda, Jane, Priscilla, Prue, and Madeleine; And — how my poor heart whirls and whirrs — EACH MAIDEN ASKED ME TO BE HERS!

"Twas "YES" to Bab, and "YES" to Prue; "Twas "YES" to Genevieve and Sue; "Twas "YES" to Madeleine, and "YES" To Jane, Priscilla, Mat, and Bess — And quite a dozen others too — O what the dickens shall I do !

PEGASUS: HIS SINECURE

I MET old Pegasus to-day While circling through the air; He seemed as frisky and as gay As when the gods were there. His sides were sleek, his eye was keen, His mane was freshly groomed; His stride and sweep were just as clean As when Parnassus bloomed.

I hailed him with a deal of joy, For Pegasus and I,
Long years ago when I, a boy, Aspired to soar the sky,
Were on good terms, and now and then He'd tiptoe in at night
And take me from the realms of men On some romantic flight.

"Dear Pegasus !" I gayly cried.
"My good old friend of yore,
In all your glory and your pride You glad my eyes once more !
I feared you dead, or even worse, Dear Pegasus, alack,
To judge from sundry modern verse Hitched to some shabby hack !

Pegasus: His Sinecure

"I feared perhaps like steeds below, Once sturdy, strong, and fleet, You'd come upon those days of woe That proved you obsolete; No longer driven by the hand Of singers temerous Whose labors in this day demand An Auto-Pegasus !"

"Neigh! Neigh!" he whinnied with a smile.
"I'm happy as can be.
I've got a new job of a style That suits me to a T.
I'm stationed on these airy lanes — A fairly easy berth —
To tow the stranded Aeroplanes Back to the solid earth !"

THE END OF THE QUARREL

I PASSED her by with noisy tread, But she, she never raised her head, But read, and read, and read, and read.

She'd turn the pages o'er and o'er, And on each printed line she'd pore As if she'd never read before.

I hemmed, and coughed, and hummed an air; I sneezed, and stamped, and scraped my chair To intimate that I was there.

But ne'er a glance gave she to me. She simply read on steadily, As wholly rapt as rapt could be.

And then I spoke, "My dearest Prue," Said I, "if I've offended you I'm sorry, and if I but knew —"

She raised her head and with a glance As distant as the coast of France — The kind the poets call askance —

"Excuse me, sir," she said, so cold I feared that I'd been overbold, "I'm reading. I've no wish to scold —"

The End of the Quarrel

And then despite her angry frown My laughter almost reached the town — The book she held was upside down !

What I got then it were remiss To set down in a verse like this; But it was sweet and rhymed with "bliss":

SIGHT SEEING

I CLIMBED a tree so high one day I saw around the world. I saw the Bay of old Biscay, And Spanish flags unfurled. My vision wandered o'er the snow And ice of Alpine peaks, Then sought the tempered vales below And lingered 'mongst the Greeks. I looked across the broad Black Sea, Past mountains of Thibet; And further to the Siamee, And China's ocean wet. Mine eye passed o'er the Philippines To Honolulu fair, And thence unto the lovely greens Nigh Pasadena rare. Thence eastward o'er the Rockies to The Mississippi's shores, Chicago next, then Buffalo, Past where Niagara roars. Across the State of York I peered Through Adirondack spruce.

By Utica's green places veered,

Thence on to Syracuse.

Sight Seeing

Next Albany, and rare Cohoes, Thence onward to the font Whence doughty Ethan Allen rose, The green hills of Vermont; Across New Hampshire's peaks so tall My vision homeward sped, And there, most welcome sight of all, THE BACK OF MY OWN HEAD!

THE PLAINT OF UNCLE EBENEZER

I'm sort of tired of things that is; They're lackin' somewhat as to fizz. There ain't no ginger in life's jar With things a-goin' as they are. The fault may be with me, and then It may be otherwise again — I ain't a-tryin' to fix no blame Becuz all tastes about the same.

Howe'er it be I wish we might Find things reversed a bit some night, So that instead of as they be They'd work towards the contrary. I'd like to see some mountain rill Have spunk enough to flow up hill, So that old Nature might be shown It had opinions of its own.

I'd like to see the settin' sun Out in the East when day is done, Just as a hint when goin' to bed To prove it wasn't bigoted. I'd like to hear a bull-frog sing Like Nightingales upon the wing Instead of that eternal "chunk" With which he seeks his swampy bunk.

The Plaint of Uncle Ebenezer

A cat that barks; a dog that miaows, And when it comes to milkin' cows 'Twould cheer me up to get a pail Of lemonade or ginger-ale; And if the bucket in the well Would give up watter for a spell And bring me up some fresh root-beer There'd be no kick a-comin' here.

'Tain't discontent that's vexin' me With life so everlastin'ly But just a sort o' parchin' thirst To get a peek at things reversed. They've been the same so very long A change would strike me pretty strong, And though I'm makin' no complaint For once I'd like 'em as they ain't !

INCORPORATED

SHE said on Monday she'd be mine Forever and for aye.On Tuesday with a smile divine She said the same to Jay.On Wednesday eve this maiden fair Our hearts were set uponGave up a tress of golden hair To pledge her troth to John.

On Thursday Reginald came by, And late on Thursday night With softly whispered, loving sigh She made his future bright. On Friday James appeared, and she Just as to us before With beaming eyes declared she'd be His own forevermore.

On Saturday 'twas Abraham Who won her much-sought hand, Although that morn she'd promised Sam To meet him on the sand; And Sunday evening after church Beneath the lunar glim She promised rich old Billy Birch That she'd be true to him.

Incorporated

And that is why we swains have met Down by the summer sea There in the damp and sodden wet To form a Company ----To form THE PRUDENCE SYNDICATE, And float a million shares. A market for them to create Amongst the millionaires. Our Assets, one small bit of fluff With mighty "taking" ways, And hand that seems quite big enough For sixty fiancés — Step up, all ye who wish to win A roomy heart and true, And buy a block of "Common" in AMALGAMATED PRUE!

THE WISDOM OF SILAS

FAITH? That's sure believin' Things that look deceivin', And their ways behoovin' Though they can't be proven.

HOPE? That is a feelin' That comes o'er ye stealin' In the midst o' sorrer You'll be gay tomorrer.

CHARITY? That's givin' Suthin' of your livin' To some one or other Like he was your Brother.

VIRTUE? That is suthin' That don't bring ye nuthin' But a pleasant i-dee That you're boney-fidee.

Love? That's suthin' funny, Sort o' bright and sunny, That comes up and nabs ye When the right gal grabs ye.

The Wisdom of Silas

If ye get these five 'uns, Keep 'em good and live 'uns, Sure as I'm a sinner You'll come out a winner ! HEAR, O Fortune, prithee hear — To my pleading lend an ear: I come asking not for gold More than can my coffers hold: I seek not a bank-account Of a fabulous amount: Jewels brilliant, gems galore, I have little liking for ! I don't want of \mathcal{L} , s. d. So much that 'twill worry me: Acres broad, and real estate, Vaults all bulging with the weight Of the bonds of steel and oil For which countless thousands toil. Stocks that rise and stocks that fall Don't appeal to me at all — But the burden of my prayer IS ENOUGH, and some to spare !

Give me this, with Love, and Song, And I guess I'll get along.

THE UP-TO-DATE FARMER

- HE was a farmer up to date. He knew each why and how.
- He had pink ribbons on his gate, and straw hats for each cow.
- He also had a Morris chair a-fastened to his plough.

He had a phonograph to call the wandering kine at e'en, And all the grass upon his lawns was freshly painted green —

A greener place than his I don't believe was ever seen.

Upon the scarecrow in the field he placed a beaver hat,

- And on its feet were brand-new boots, each covered with a spat;
- And where the scarecrow's stomach was looked prosperous and fat.
- The farm-hands all wore jackets red, and worked with polished hoes,

And in the lapel of each coat was placed a Beauty Rose,

- And little coons held parasols to shade each worker's nose.
- The wheels of all his whirring wains were tied to gramophones

The Up-to-Date Farmer

- That sounded pretty waltzes, 'stead of noisy creaks and groans
- When straining o'er the country roads of thank-yemarms and stones.
- At eve when sunset's lovely glow made all the sky a prism
- He called the farm-hands with a horn and kept them free of schism
- With little talks on "Simple Life," "Sunshine," and "Pragmatism."
- His horses he provided all with bedsteads made of brass,
- And every pillow 'neath their heads was made of freshcut grass,
- And those that couldn't sleep were lulled to rest with laughing-gas.
- The pigs were scrubbed with Silver Dust, and whitewashed white as snow,
- And in each pen hung copies of rare paintings by Rousseau,
- With here and there a Whistler, or a lithographed Corot.
- His sheep were never sheared at all marcelled was every hair,
- And every ram upon the place had quite a polished air —
- By proper treatment e'en a goat becomes quite debonair.

The Up-to-Date Farmer

- The bulls were up on etiquette, and if by day or night
- You met them strolling in the fields were ever most polite —
- I don't believe Lord Chesterfield was a more charming sight.
- And so with everything he had. This farmer up to date
- Had things as fine as fine could be from barn-yard to the gate —
- His hay-scales e'en were covered with a wash of nickelplate.
- And though he seldom raised a bean, potato, or a pea,
- He waxed as fat and prosperous as one could wish to be
- Who tried to live the farmer's life, as did his wife and he;
- For thousands came from far and wide, on foot, by train, a-wheel,
- To see this wondrous farm of his, if it was truly real --
- And these he charged ten dollars for a thirty-five cent meal,

Until his coffers waxed as fat as those of Mr. Guelph — He simply rolled in silver, gold, and other kinds of pelf —

If so you don't believe it figure out the thing yourself.

The Up-to-Date Farmer

- And then besides he added much each month unto his means
- By writing articles on BEETS, and THORNLESS LIMA BEANS,
- The which were snapped up eagerly, and used by magazines.

From all of which I gather in a general sort of way

Those folks are talking foolishly who rise them up to say

In accents full of sympathy that Farming doesn't pay.

DIPLOMACY

IF you know a little lady With a tongue that's rather tart, And a liking for the shady Bits of gossip of the mart, And she tells a tale about you That she knows to be untrue, Causing many folks to doubt you, What is it that you should do?

- No! You mustn't use the phrases you would use about a man.
- Turn and sound the lady's praises just as loudly as you can.
- Never call a dame "SAPPHIRA!" Such a course would hardly pay.
- 'Twill be heaping coals to fire her, should you say:

"She is gifted with that elusive charm that is sometimes found in a woman endowed by Nature with a constitutional infirmity of verbal purpose."

Put it neatly, and discreetly, Put it sweetly, with an air 85

Diplomacy

That you're saying something pleasant of your enemy so fair.

Put it nicely, and concisely,

Put it wisely — with a twist —

And you'll gain a reputation as a great Diplomatist !

If you have a Taxicabby

With a granite sort of face,

And a muscle far from flabby,

As is frequently the case,

And he charges you a dollar

For a quarter mile or two,

And you feel you ought to holler —

What's the thing for you to do?

No! You mustn't use the phrases you would use to smaller fry.

Chaps with such peculiar faces are a menace to the eye. Never call the cabby "LOAFER!" Such a course would hardly pay —

It will freeze that pirate Chauffeur should you say:

"Really, my good sir, I had supposed that Ali Baba and his Forty Pals had passed over the Great Divide. When did you all return?"

Put it neatly, and discreetly, Put it sweetly, with an air

Diplomacy

That you're saying something pleasant—THEN FORGET TO PAY YOUR FARE !

Do it chicly, politic-ly,

Fading quickly from his fist,

And you'll gain a reputation as a great Diplomatist !

If your friend has penned a novel That you know is very bad, There's no need to go and grovel Just to make the fellow glad. When he asks you if you like it, And you wish to tell him true That he really ought to hike it Up the literary flue —

- No! You mustn't use the phrases you would use to give the hook
- In the ordinary cases to a dull and stupid book.
- Do not call his novel "DRIVEL!" Such a course would hardly pay.
- It will be a deal more civil should you say:

"Yes, Henry, I've read your novel, and by the way, while on that subject, did you ever think of taking up plumbing as a profession? They tell me it is very profitable."

Put it neatly, and discreetly, Put it sweetly, with an air

Diplomacy

That you're saying something pleasant to a genius rather rare.

Put it gently, innocently,

Incident'ly, hit or missed,

And you'll gain a reputation as a great Diplomatist !

- THE World owed me my share of bread, My meed of joy and pleasure.
- It owed me roof, and chair, and bed, My share likewise of leisure.
- It owed me clothing for my back, And cash wherewith to fund it,
- So I went out upon its track,

And night and day I dunned it.

- With brain, and brawn, and energy, My powers all releasing,
- I dunned it on the land and sea, With labor all unceasing.
- I dunned it with the sweat of brow, No chances ever scorning.
- My hand was ever at the plough With each recurrent morning.
- No matter where the world lay hid
 - I constantly pursued it,
- And what man could do that I did --
- I threatened it and wooed it.
- The debt it owed all fully paid
- I constantly demanded, Nor would I ever be gainsaid
 - When Mr. World seemed stranded.

The World, Dr.

The food was there, the joy was there;
The roof, the bed, the table,
And cash enough, and some to spare
Like treasure in the fable;
And back of all the needs of life
In most abundant measure
Lay sweet relief from rush and strife
In golden days of leisure.

And thus I dunned, and dunned, and dunned,
Incessantly, untiring,

And soon instead of being shunned I found the World admiring.

And then it paid, and yet the more My credit balance showed me

There seemed in an increasing store No end to what it owed me !

ENVOY

The World is glad to pay its stakes, Nor wishes to reject them, To every Creditor who takes The trouble to collect them.

THE JUNKMAN

A Literary Parable

NIBBS wrote for years, and years, and years — Poor wight! His harvest was but tears, For every line he wrote, alack, Came like a homing-pigeon back, Until his dwelling was packed full Of manuscripts unsalable, And all his walls in endless strips Were papered with rejection slips.

His cellar held quite twenty score Of Tales of Love, and maybe more, And every book-shelf in the place Ran o'er with stories of the chase. In bureau drawer, in trunk and chest, In highboy, lowboy, packed and pressed, Lay sketches, novelettes, and rhymes, Which he had penned at sundry times,

He caught the measles, and at last From out this vale of tears he passed; But where he went to none can say — We only know he passed away. His widow wed again, a wight Who called the Junkman in one night, And as waste-paper sold that store Of stories Nibbs had struggled o'er.

The Junkman

"Twas then there dawned upon the land A miracle of genius grand — A man who'd never gone to school, Yet reeled off tales as from a spool — An endless spool at that, and who Though rough the Muses fair could woo, As did the bards of Queen Bett's age — The JUNKMAN POET was the rage.

The Junkman's novels had a sale That turned the Six Best Sellers pale, And publishers in frenzied race Outbid each other in the chase For storied stuff he had to sell, And those who got it did right well, For everywhere folks raved the while About the Junkman's "splendid style."

The moral? Well, I've sometimes thunk He waxeth fat who deals in junk!

FISHIN'

Don't ye talk to me of work ! I'm jest goin' fishin' Where the speckled beauties lurk, Round the pools a-swishin'. Ne'er a thought have I of care, Settin' on a green bank there, Drinkin' in the soft June air, Void of all ambition !

I don't care much what I ketch, Long as I am anglin'.

What I carry, what I fetch,

On my string a-danglin'. Makes no difference to me — Some or none, whiche'er it be — While I'm off there wholly free From all scenes of wranglin'.

Fishin' ain't jest ketchin' fish

In a pond or river — Though a fresh trout on a dish

Makes ye sort o' shiver — Fishin's settin' on some spot Where it's neither cold ner hot, Without thinkin' on your lot —

Fortune, love, or liver.

Fishin'

Fishin's gettin' far away From all noise and flurry; Gettin' off where you can play Nothin's in a hurry; There to sort o' loaf, and set, Blind to all the things that fret, And forgettin' all regret, Quarrils, cares, and worry.

Yessir ! I'll give up ambition, And fer fame and fortune wishin' Any day to go a-fishin' !

ON A STORMY MAY-DAY

MAX hath forgot her manners, I do fear — This fairest child of all the gladsome year Comes in with poutings, and with suller mien, Instead of smiling like a vernal Queen. She's weeping too, with frowns upon her brow, And truly hath forgot her pleasant bow. Egad ! I guess the reason for her woes, Rude April leaving trod upon her toes !

A-E-I-O-U

A COMETH first, and all because Of certain Alphabetic Laws. We'd have no Alphabet to-day If we had not that vowel A, Because, it's just as sure as sin, We can't have things that don't begin.

E cometh second, if you please, Although some folks place first their Ease. I love it well because, you see If you have wit, it's half of ME; Without it I should have no feet, And nothing in the world to Eat.

I? Well, I'm rather fond of I Although I work it strenuously. "Tis somewhat personal, and it Is quite the centre of all Wit. And though you'll find it in distress It's never wanting Happ-i-ness.

O is a vowel I admire — Though what I owe is often dire ! And though 'tis Naught, it's part of gold; 'Tis in each Joy that we behold, And Love could hardly be the same If we'd no O to spell its name.

A-E-I-O-U

The last is U. Well, I should call This vowel quite the best of all. Let me have U and I'll give o'er The blessings of the other four. The reason? Ah, dear Heart, 'tis true ! It's just because, my Love, it's YOU !

.

A CONFESSION

SUCH matters it perhaps were best for us to hold sub rosa,

Yet 'tother night when Prue I caught beneath the mistletoe, sir,

I kissed her twice --

I kissed her thrice —

And every one SUB NOSA !

A LEGEND OF THE STRAND

'TIS said an author who had starved to death Went walking some years after he had lost his breath In spirit up Fleet Street, then down the Strand And found himself before a Bookman's stand. "What's this?" he mused, as in his hand

A book

He took.

"Dear me, my verse !" he cried, and kissed the tome.

"You killed me-cost me roof, and hearth, and home.

To publish you I spent

My last red cent,

But none would buy,

And I

Was soon the sorry shadow of my former self, While you lay snugly on my dusty shelf.

Heigho !" he sighed.

"You were my pride,"

And ruin !" Quoth the Book, "Not so --

You died too soon to really know.

I have become

A rarity, and worth a wondrous sum,

And through me now

You wear a bright green laurel on your brow !" E'en as the volume spake

A mortal came, the little book did take,

And as the spirit watched him from the shade

Some twenty pounds for it he forthwith paid.

A Legend of the Strand

"Egad !" the author cried, as back he sped To Hades, "I have resting on my head Enough of hay entwined to feed a horse ! I'm proud of that — O yes, I am, of course. But what a shame to decorate An author's pate And leave his stomach to disintegrate !"

AS TO LINEAGE

"FIRST families" are very fine,

If one believes in caste. "Tis very well to have a line Of Ancestors for eons nine — Fair Eve and Adam started mine —

But, take it first and last, There's little in a family tree

Whose fruit has gone to seed; "Tis better far for one to be A mushroom minus pedigree, But of the best variety

In character and deed.

My boast is not of how I trace My line to noble Guelph, Or other leaders in the race, But how I'm going to win a place, However fast or hot the pace,

As Ancestor myself: So that, when all is over here,

Up in that realm of bliss, My forebears back to Adam's year When I arrive will loudly cheer, And whisper in their neighbors' ear:

"WE'RE RELATIVES OF HIS !"

THE PRANKSOME MUSES

THE Poet knew the Rules of Song, And never got a measure wrong. The Ploughman knew no laws of rhyme, Yet was he singing all the time. The Ploughman voiced his simple heart. The Poet practised well his Art.

The twain Parnassus climbed one day And met the Muses, so they say, And when the wreaths were given out The Poet got none, but the lout Who sped the plough, by Helicon, They put a pea-green laurel on !

FATE

WHAT care I if Fate hath written What my destiny shall be? That's no reason to be sittin' Down thro' all eternity.

I'll be up, and I'll be doin', Careless of the by-and-by, And, whatever Fate is brewin', Have a finger in the pie! IT was a blithe Conductor on an urban trolley-line, His uniform was spandy, and his buttons they were fine. I asked him would he tell me where I ought to leave the tram

To get the nearest Ferry to North Central Rotterdam. He paid me no attention but danced gayly down the aisle

With very supercilious and irritating smile.

Again I put the question, and he coldly answered me:

"When seeking information ask Conductor Twentythree!"

> His specialty I now saw well Was merely jingling of a bell.

I rushed into a restaurant to get a hasty meal And told the waiter I should like a little bit of veal. He wandered off. An hour passed. I summoned him once more.

And gave again the order I had given him before.

He gazed out through the window with a look quite far away;

About his lips a furtive smile was making a display.

"I'm very sorry," he remarked. "The veal-man isn't here.

But when he comes I'll tell him what you want avec plaisir." 'Twas then I learned this precious clam Served nothing else but pickled ham.

The Specialists

The pipes were bursting everywhere, and floods were all about.

The parlor was so flooded the piano floated out.

The dining-room was deluged with a freshet so immense It made the storied Ganges look like twenty-seven cents. I quickly 'phoned the plumber, and he answered me at

once,

But acted like a copper-fastened, armor-plated dunce.

- "Why don't you get to work?" I cried, so mad I scarce could speak.
- "You asked me what the matter was," said he, "and it's a leak."

His sphere was of the special type Of merely looking at a pipe.

Some time ago quite carelessly I fell into the sea.

The water was so deep and rough 'twas quite too much for me.

I felt myself a-going down, and then with maddened yelp

I called to some one on the shore imploring speedy help.

He waved his hand most affably and said he wished he might

Do something that would help me in my most distressing plight.

"I'm sorry, friend," he roared to me. "I'd help you if I could,

But I'm devoting all my time to chopping kindling-wood." And that is how it came to be That I was drownded in the sea !

PHYLLIS AT THE CUSTOM HOUSE

SHE vowed she'd nothing to declare, Altho' some forty trunks were there, And all were filled with objects rare.

The Customs men pried ope the trunks As solemn as a tribe of monks, And things came out in solid chunks.

Tiaras, necklaces, and crowns; A baker's dozen Paris gowns In lovely pinks, and blues, and browns.

Furs of all kinds from seals to cats; Three solid hampers filled with hats, All held in place by wooden slats.

She'd stockings by the dozens — silk, And open-work, and of that ilk, As lacy and as white as milk.

And gloves — of gloves I sadly fear She had enough for forty year — I know they covered half the pier. 106

Phyllis at the Custom House

And laces — my, what lace they found ! 'Twas hardly half of it unwound Before it covered all around.

And lingerie — well, I don't know Just what she had, but this is so: The pier seemed full of drifted snow !

And so it went, still more and more. Those trunks revealed a wondrous store Of lovely objects by the score.

And she as cool as she could be Sat there and dimpled prettily At the Inspectors and at me.

A picture of such virtue strong That not a man in all that throng Believed her capable of wrong.

"You call this NOTHING, Ma'am?" they said. She smiled and bowed her pretty head, As free as Innocence from dread.

"Of course I do," she made reply. "They're nothing" — here she winked her eye — "Compared to what I didn't buy!"

And I'll be sworn, for it is true, THOSE DAZED INSPECTORS LET HER THROUGH! 107

THE CURRICULUM OF LOVE

A College Professor has suggested the desirability of establishing a course in Love Making in our Universities. — Daily Newspaper.

THEY'LL doubtless teach the maiden wise How best to use her sparkling eyes, And with a glance flashed through the dark Unerringly to hit the mark. They'll teach her, natheless, how to say Her Lover "No" in such a way That he'll discern in his distress A "No" is oft a form of "YES."

They'll take a maiden free of guile And teach her clearly how to smile Flirtatiously, yet innocent Of consequences consequent. They'll lecture her on "Methods Sure To hold a Wavering Swain Secure," And all the other sundry arts To make her Bachelor of Hearts.

As for the lads, they'll teach them "Fine Points of the Eternal Feminine"; They'll show them how, when they would please, All maidens go by contraries;

The Curriculum of Love

How when they smile on other men And turn from one, nine times in ten That one they love, and do this thing To tie him to their apron-string.

They'll teach them signals of alarms. Just when and where to "take to arms," And how the eye that's turned away Means "come again some other day"; How tears may be a sign of joy, And frowns no more than a decoy; And when great crises must be faced How best to utilize the waist.

THE DEEPER NOTE

THE DEEPER NOTE

"I sing of brooks, of blossoms, birds, and bowers." —HERRICK.

To sing of brooks, of blossoms, birds, and trees, And all the rare things of the summer-tide, When joy's a-wing upon the playful breeze,

And every prospect's smiling as a bride — Aye, that were sweet ! All worthy themes for song.

Each speaks the bounty of a lavish earth —

The blessings rare that rightly do belong

To them that seek the treasuries of mirth.

Yet would I pause the while and seek a theme In ways less smiling than the country-side.

In far-off scenes of stress I sometimes seem

To find a voice that will not be denied —

A voice that mid the arid scenes of woe Still lifts itself on high in notes of cheer

Hath for my soul a richer, deeper glow

Than happy bird-notes in the morning clear.

Who sings amid the joyous fields of peace

Where all is sweet, and fresh, and lushly green, But gives an inward happiness release,

And adds new glories to a gloried scene;

But he whose song springs forth from care and strife,

Like an oasis in some desert plain,

His is the song that gives the hopeless life,

And thrills with living joy the heart of pain !

THE ROSE

THE Rose was born, She bloomed, and died. "A lot forlorn," Some mortal cried.

"A few brief days Of life, a breath Like summer haze, And thence to death !"

Ah well, that's life ! Our years are brief. Some joy, some strife, And then relief.

How joyous she, How free from woes, To live, and be, And die, a Rose !

IN ABSENTIA

ALONE? Not I, indeed ! Though thou art gone, And countless leagues between our paths we see, I'm not, and never shall be, quite alone The while one blissful thought In memory caught Of thee abides with me.

Mine eye still holds the glory of thy face. Remembered smiles my solitude rejoice, And in despite the ban of Time and Space Within my soul I hear, Still ringing clear, The music of thy voice !

THE WAITING INSTRUMENT

I BLAME no man for failure here, for he Who wins no crown is like an instrument That silent waits the Master's touch to free The noble numbers that within are pent.

Untouched and unawake, and still it stands, Despite the glorious measures it contains — Who knows but that in those diviner lands 'Twill swell the songs of Heaven with its strains ?

MIRACLES

You ask for miracles, my friend? Ah, well, Perhaps your eyes are blind and cannot see. I seek them too, and find them, truth to tell, Where'er I look, in sky, on hill, in dell, And when the summer weaves its magic spell, The Rose alone's a miracle to me !

THE DREAMER

CHIDE not the Dreamer, but more wisely hold His dreams more precious than refinéd gold. Had men not dreamed of greater things to be, Then lesser things on every side we'd see.

The fancies of the bygone centuries Are counted 'mongst to-day's realities And form the firm foundation on which Youth Doth surer rear the edifice of Truth ! SPEAK not to me of parting here — I will not have it so ! One of us may in some dread year, Some year of chill and snow, Pass on, but part ? By all above, That we shall never do, For you are all myself, my Love, And I am one with you !

You may be called to some far spot, On some blest errand bent,
And leave me here to moan my lot In grievous discontent,
But parted ? Never ! Dire defeat Dogs those who'd make us two,
For you are all myself, my Sweet, And I am one with you !
My spirit intertwines with yours,

And yours is woof of mine, And long as Love itself endures 'Twill find therein a shrine. No earthly chance can tear apart, Nor sever tie so true, Whilst you are all myself, my Heart, And I am one with you ! 119

TO TIME

"TURN back, O Time !" the aged cry. "O give us back the days gone by !"

"Haste thee, O Time !" the Youth implores, "Fast lead me on to Fortune's doors !"

For me, dear Time, I do but pray That thou wilt linger here To-day !

BETTER THAN GOLD

THE Midas touch no blessing were To him who loves the green That 'neath the silken spring-time air Lends lustre to the scene;

Who loves the red of petalled rose, The hues of blossoms glad; The beauty of the garden close In vernal colors clad;

The luscious cherry of the lips, And pink cheeks of a maid, Whereon the lover fondly sips His nectar unafraid !

Now who would envy Midas much And suffer all the loss That needs must follow on the touch That turns these sweets to dross?

AS TO YESTERDAY

"All one dark yesterday." — American Poet.

"DARK yesterdays?" Ah, say not so ! Our yesterdays have faded into night, Yet are they bright, And in the memory still they glow. The voices of those yesterdays Now hushed in silence still resound In echoing roundelays That in the heart abound. The youth of other days now passed to age ---That is not dead As some have said. But with its light illumes our spirit page. The friends of yesterday, no more Beside us as they were in days of yore, Still linger here in spirit, glorious, A part of us, Held safe within where neither grief nor pain Can come to them again. "Dark yesterdays?" call them not so. Possessions, rather, full of light are they That sorrow cannot touch, and woe Can never take away !

A VISION OF LOSS

HERE in the midst of quiet sylvan scenes All sweet with pine, and rich with lovely greens, I dreamed last night a splendid City grew — Broad boulevard, and gleaming avenue; And towering walls of stately palaces Reared their proud height. Where yonder woodland is A shining marble Temple lifted high Its massy front in frigid majesty.

Where lurks the keen-eyed fox, great dwellings stood, Wherein were housed a restless multitude Of busy folk engaged in gainful toil, Their haunted eyes all hungering for spoil. The music of the countryside, the bird, The lowing of the kine, no more was heard, But everywhere the rumble, void of heart, Of the incessant pressure of the mart.

Yon silver stream that flashes in its flight Had vanished wholly from all mortal sight, And passing o'er its one-time pebbly bed Ran iron ways that bore on, overhead, Huge steel-wrought carriages, filled to the full With travellers, their faces tense and dull, To beauty blinded in their daily meed Of toilsome effort and of selfish deed.

A Vision of Loss

Yon fair expanse of lushly fertile fields Bore naught of grain, but cold, reluctant yields Of coinéd gold, and lanes where Nature's flowers Shed fragrance over countless elfin bowers Were bordered now with rows of shops that thrust Their wares on throngs mad with the money-lust; And all the quiet of these vales of rest Gave way to raucous shriekings of the quest.

Alas! What dismal fate, ye scenes divine! What horrorific transformation thine! Must Nature's Temples, void of strife and shame, Give way to such things in fair Progress' name? Is it thy fate, O Woodland of my Soul, To prosper thus, and thus to harbor dole? My heart grew heavy with a sodden pain, And I awoke, and all was peace again.

AS TO OTHER WORLDS

WHATEVER other worlds may be, Wherever be those realms of bliss,
I only hope that those I see Will turn out half as good as this.
The grass cannot be greener there, Nor any birds that sweeter sing,
Nor can there be a silkier air Than that which comes with dawning spring.
Can summer breezes softer blow ? Can any stars wear friendlier mien ?
Hath any embers richer glow Than those that on my hearth are seen ?
Are flowers sweeter to the sense, Can roses tell us more of love,
Or dress with more magnificence

In other worlds we know not of?

Nowhere can sunbeams happier play Than on this blessed earth we know; And even when the days are gray, And all is hid in drift and snow, What rarer joys can there beguile, When twilight with its peace hath come, Than that unfailing radiant smile With which affection calls us home ?

MY ALLIES

THE world is gray, and bleak, and drear.
The trees are reft of leaves, and stark
Are standing yellow in the sere,
And round me hover spectres dark —
But what care I ?
Have I not still the smiling sky
So deeply blue
Of hue,
To send me hope from up on high ?

My cherished plans have gone astray, And schemes with great ambition fraught Have come to ruin in the fray, And left me weary and distraught — And yet afar I see a friendly twinkling star, That lures me still With will To labor where life's treasures are !

Give me the blessed stars, and skies, With just a glimpse of sea besides, Upon whose waves the sunlight lies, And fades into the moonlit tides !

My Allies

Then shall I be Unmoved by what Fate holds for me Of weal or woe, And do The task that's mine exultantly !

INSPIRATION

GIVE me some green and grassy chair, A boulder for my table, And let the silken summer air Sing me its song and fable.

I'll bid my fancy follow free The breeze's inspiration, And let my pen's whole effort be From Nature's own dictation.

ON LINCOLN'S BIRTHDAY

A DAY of joy, a holiday ! A day in festal colors drest To honor one who knew not play, Nor ever tasted rest !

O Man of Sorrows, and of Tears, Would we might bring to you Back through the pathway of dead years One touch of comfort true !

Would that your eyes might penetrate The shadows in between, Through all the clouds of war and hate, And mists that intervene,

Into the hearts of all the throng Of living men, to find Your name and fame the first among The treasures of mankind !

IN JULY

A SUMMER night, a summer sea — The stars all twinkling joyously; A cooling breeze that wanders by As soft as some poor lover's sigh; A flash of moth athwart the light; The moon a marvel to the sight; A touch of music on the air, And balmy odors everywhere To tell the story of the rose That sleeps in yonder garden-close; And at my side the Only One Since life began, till life is done — Were all the world at hand to take I would not from this dream awake !

THE TASK

THE deed that I would do Involves no valor of the sword. That in one moment mad of rue Should earn for me some rich reward, And cause posterity to rear, Where an admiring world might see, To pierce the upper heavens clear, A bronze, or marble shaft to me; But in some corner of some squalid way Where misery shall lurk to fight, And bring the sunshine of a joyous day To dawn on souls oppressed by night; To put unhappiness to flight, And start Some hopeless heart Upon the road to hope; or where distress Hath dwelt, by acts of tenderness, And words of courage, helpfulness, and cheer, Drive out some mortal's fear, And set him on his way to light !

THE FOUNT OF SONG

Go, Singer! Seek the woods and dales; Seek thou the mountain heights, the vales; List to the music of the breeze. The songs of birds, the whispering trees; Breathe in the silken summer air: Take in the essence of the fair Deep summer skies that spread above By day, and seize the treasure-trove That falls from those eternal heights On starry nights. The language of the flowers learn; The fairies seek amid the fern: Bid all the brooks that woo the sea Unfold their secrets unto thee — All things that whisper to the heart And Nature's messages impart, Seize thou, and then Take up thy pen,

And weave them in thy song alway And thou shalt wear the everlasting bay!

THE POET

THE Poet starved, yet, faithful to the end, His lines held food for brothers in despair, And in his cheerless attic coign he penned The lines of cheer that killed another's care !

IN THE MONTH OF FEBRUEER

In the month of Februeer Poets' songs are sad and drear — Biting winds, and chilling mists; Life is seen through amethysts — Darkly purple Februeer!

In the month of Februeer, In the yellow and the sere, Singers see but little worth On the dark and dreary earth — Sombre season of the year.

Poor old month of Februeer ! How they love to gibe and jeer — Those who're eager and alert For the things that sting and hurt — Can't deny them, Februeer !

Yet I love thee, Februeer. I can see the things that cheer — Little samples of the spring, Hints of songs the birds will sing When the April days appear.

In the meadow, on the mere, Here and there a grassy spear,

In the Month of Februeer

Now and then a promise of Coming flowers full of love — In these days of Februeer.

Only needs an eye and ear With the wish to see and hear. What we seek we ever find — Sordid things, or blessings kind, In the month of Februeer! WHEN spring days come and I have naught to do. I love to rest beneath some spreading tree, And gaze aloft into the dreamy blue And think of all the wonders sweet and true A gracious Father hath prepared for me — The earth all fair upon whose verdant breast I lie at rest: The freshness of the morn, the joyous birds, The tuneful lowing of the distant herds: The lovely mysteries Of budding trees; The dawning beauties of the garden-close, The violet, the daffodill, the rose; The misty hills now greening in the sun; The twilight lengthening when day is done — These gifts divine All, all are mine. To take, to use, and fitly to enjoy, Whatever may annoy. Wherefore in spring I love to rest and brood On gratitude!

THE LIGHTED WAY

LET those who will sound notes of dull despair, And fill with lamentation all the air — For me, let it be mine alway to send The cheery note of Love, unto this end : That they who on some path of darkness grope May find their way to Light through gleams of Hope.

THE THIEF

WHO robs me of my purse is welcome to his gain. Who taketh from my fame doth naught to cause me pain. Who rifles me of love takes naught of mine away For true love once possessed remains secure for aye.

Who robs me of my name need fear no harm from me If only I am sure of my integrity, But he who steals my faith — ah, he's indeed a thief

Who robs a trusting human soul of its Belief !

"THE HYPOCRITIC DAYS"

"Daughters of Time, the hypocritic Days." - EMERSON.

WHY do you speak of "hypocritic days"? Are days dissembling then, prone to deceit, And given o'er to falsely cunning ways That threaten mischief when they seem most sweet?

For once, my best loved Poet, do you seem To me to stumble in your path of light — The days indulge no hypocritic dream To lure mankind from peace to depths of night.

"Tis we, not they, who make them what they are. They come to us of guile and pretence free: Clean, clear, and spotless on the calendar, God's Messengers of Opportunity !

SIR KINDLY-THOUGHT

O KINDLY-THOUGHT, go straightway forth, Fly East, and West, and South, and North.

Cheer downcast hearts, and take surcease To troubled souls that yearn for peace.

Wax great, O Kindly-Thought, with use ! Be Joy's St. George, nor call a truce

In battling care ! With shaft of light Slay thou the Dragon of the Night !

THE POET'S GRAVE

"HERE lies a Poet !" Nay ! There lies a stone ! Here lies perhaps a useless, mortal frame, An inert mass of weary dust and bone

That once hath borne a glorious singer's name. But he, the Poet, lives, nor e'er shall pass From out the joyous and imperishable throng Of those who put the love of lad and lass, The grandeur of the sea, the green of grass, The voice of birds, the beauty of the flowers, The happiness and peace of quiet hours, The music of the winter-wind, the thrill Of spring-tide, and the babbling mountain rill, The glories all sublime of Motherhood, And Brotherhood, The joy of living, and the heart of man Within the span Of Godlike song !

A FIRESIDE FANCY

THE dancing flames as from the logs they fly, And upward leap as though to seek the sky, Seem like the souls of fallen pines to me, Eager, elate, at thought of being free; And now and then a soft, scarce-whispered hiss That greets the ear suggests a parting kiss — Or is't the sigh of one who at the last Recalls some blissful moment of the past?

THE JOY OF LIVING

DAME Fortune passed him by with sullen frown, But he, with joy of living so beguiled, Within his heart was not at all cast down, And as she went her way looked on and smiled.

TRANSPLANTED

O SEND me some soul from the city street To plant in my garden fair, Some poor little wight with his weary feet, His rags and his touselled hair.

I will plant his roots in the moist sweet earth, I'll bathe him in soft sunshine,

I'll water his leaves with innocent mirth Out here in this close of mine.

I'll give him the air of the countryside, The health of the piney hills; The rapturous sweets of the eventide, The songs of the birds and rills.

And he'll blossom forth like a lovely rose, In beauty, and thought, and deed, Not lost in the city's dark whirl of woes, A sad little human weed !

THE SOUTHRON MESSENGER

MR. SOUTHWIND came a-soughing Gently through the stark-limbed trees — Came so far he seemed a-puffing, Slightly shaky in his knees;

But a pleasant message carried From the land where he was born, To the fields by winter harried, In the Northland all forlorn.

"All your friends the birds send greeting From the Southland," whispered he. "Looking forward to the meeting That will very shortly be.

"And the hosts of fragrant flowers Send their kindest love, and say They are counting up the hours Till the glad home-coming day."

And it seemed the cold, gray meadows, And the sleeping stark-limbed trees, Brightened mid the wintry shadows At the Southwind's messages.

ь

MARCH

COMETH March with wind and rain; Cometh March with sun and shine; Cometh March the bold again — Weather sombre; weather fine.

Here a bit of autumn shows; Here a bit of spring appears; Here a touch of summer-glows Drives away the winter's tears.

What is March? "Tis neither spring, Winter, summer, nor the fall. Singing now, now murmuring. Little touches of them all.

Bits of trouble, bits of joy; Days of peace and days of strife; Frowning, smiling, pushing, coy — March, epitome of life!

THE ALTERNATIVE

THIS thing of brass is here; These things of stone abide; These blocks of marble rear Their cold and sculptured pride.

These things of wroughten steel Of centuries long dead, Their presence still reveal Despite the ages sped.

Impassionate and still, Insensate all are they; Untouched by joy or ill, As lifeless mortal clay.

Durst say 'tis Nature's plan That these shall live for aye, The while the Soul of Man Alone shall sink and die?

The Soul of Man that breathes, And strives with Godlike might; The Soul that loves, and wreathes The world in bays of light?

Durst say that this is truth ? Then better far that we Give o'er the dreams of youth, And stone and iron be !

¹⁴⁷

A WOODLAND EASTER

"TIS Easter morn, a day of loveliness. The earth, and sky, and sea, are bright of mien. All Nature dons its fairest gala dress, And everywhere white blossoms deck the scene.

The birds the Easter carols blithely sing. The swelling chorus echoes through the dells, And with her joyous message dawning spring The story of the Resurrection tells.

All things look upward to the heavens high; In offerings of praise each bears its part, And deep within my woodland dwelling I Find Easter chimes are ringing in my heart.

NATURE'S COMFORTERS

WHAT though my plodding pen may fail, And all my lines seem poor, and pale? I know what's in my heart to say, And that illumines all my day; And in the wood the tall pines form An andience steadfast and warm; And as my halting measures rise The breezes answer with their sighs; The birds make answer to my song Despite my note is far from strong; And in the hills an Echo free Repeats my measures after me !

THE CATCH

I've enjoyed the chase to-day Through the woodland wild. Fortune in a lavish way Hath my heart beguiled.

I have filled my game-bag well — Better than I thought. Fat and teeming it doth swell With the things I sought.

Songs of birds, and songs of trees. Gentle whisperings of the breeze. Splendid mess of mountain air. Odors of wild-flowers rare. Happy thoughts that grew apace As I watched the rillets race. Wondrous pictures in the skies. Vistas soft for tired eyes. Hints of peace, and hints of rest. Gorgeous colors in the west. Stores of gold flung far and wide O'er the gleaming country-side, As the sun smiled on the scene, Lighting up the forest green.

O the joy, the glad delight, O the taste of bliss, Making homeward through the night With a catch like this !

THE SUNNY SIDE

LIFE holds no woes for me ! I know full well, However evil things may seem to me to-day,
Some future joy is certain to dispel The clouds that lower darkly on my way.
And I have noted that one taste of bliss, E'en though 'tis but a taste, hath joyous meed
To compensate for all that goes amiss On which a soul in sorrow long may feed.
No night e'er was whose darkness did not fade; No storm e'er raged whose course was not soon run;
And so my soul, by troubles undismayed, Doth simply wait the coming of the sun.

THE HERITAGE

WHEN so a heavy rod shall rise to smite me, And sore afflictions come to sear my soul,
When complications round about affright me, And clouds of sorrow from all sides uproll;
When trial waits my gaze at every turning, And chill misunderstanding greets my deed,
And spite of all the thirst for good that's burning Within my heart finds no responsive heed;

When sturdy friends I've counted on are wanting; When enemies rejoice to see me fall;

And o'er my troubled spirit gray the haunting Fears of a ruin imminent appall;

When all my days are days of gloom and sadness, And where was light no hint of light appears;

When every hope I hold to seems but madness, And they who used to praise now turn to sneers;

Still in my breast despite its load of sorrow, Despite the pressure of o'erwhelming care,

I sense the thrilling joy of a to-morrow

Whose dawn shall lighten up the darkness there. I sense a moment nigh, when, woe abating,

I'll tread the path that leads on to release.

And find a cure for troubles dire awaiting

Safe in the everlasting arms of Peace.

The Heritage

For Life and Love so close are interweaving That none can live and yet be portionless; And days must come with hours all retrieving The dreary years of unfound happiness; And he whose share of Love is not yet ready, Whose measure of its joy is yet unknown, Need only keep his Faith both sure and steady To come sometime, somewhere, into his own !

THE SONG OF THE ROSE

I AM the Rose, the promise of the spring That winter's frosty chains, so withering, Cannot avail, whate'er their power be, To hold the soul for aye in slavery.

A messenger to spirits bowed in care, The hopeless and oppressed, am I, and rare The message that I spread throughout the land — "Hold fast thy Faith! Release is close at hand!"

A messenger of Love, likewise, am I. I hold the kiss of sun, the zephyr's sigh; The loving whisper of the breeze that fills The lonely heart with life's divinest thrills !

And they that pass along the thorny way, Their fortunes fallen on an evil day, Despite my flaunting pride, they call me good Because my friendly nod speaks brotherhood !

The glowing colors of the dawn are mine. The gloried hues of sunset all combine To clothe me in a vestiture all blent With peace, and joy, and rapture, and content !

And when the fragrance of my presence seeks The spring and summer air, it but bespeaks The meed of all, in sorrow or in mirth, The everlasting sweetness of the earth !

THE WEALTH OF THE ROAD

O GIVE me for treasure no gems of the Ind, But just the rich gifts of the sun and the wind; My lungs full of ozone, my soul full of glee — The wealth of the Road is the treasure for me!

Who cares for the gold, for the bonds and the stocks, Hid deep in the grip of some steel-armored box, When out on the highway when twilight comes by He seizes the sunset that blazons the sky?

What riches are they that are measured by pence And wrung from a toil that is selfish and tense, Compared to the wealth of a soul that is free And roams o'er the broad open highway with me?

What silver of dross in the realm of the mart, All cold, unresponsive to soul or to heart, Can give to the spirit of man such a thrill As comes from the silvery song of the rill?

Mankind to the full of my powers I'll serve, But seek my rewards, not in shattering nerve, With gold for my pay, but the rich stores of love That stream from the hand of my God up above !

The gold of the dawn — that is ever mine own — I spend like a prodigal set on a throne,

The Wealth of the Road

And yet when 'tis spent, all the greater my thrift — One gains in the giving of this blessed gift !

For music the birds, and the whispering breeze; For bed some soft spot where the pine lures to ease; For comrades God's creatures that prank everywhere; For books the rare fancies that throb in the air!

And 'stead of rich robes made of fabric so gay That men in their winning dare death on the way, Content is my heart, and my meed is delight, In clothing my soul in the mantle of night.

Seek ye, if ye will, the cold treasures of earth — I'll take for my share all the joy and the mirth Of freedom that comes with no trials to goad To him who's content with the Wealth of the Road !

HUMOR

"Humor dwells with sanity, common sense, and truth." — BISHOP BREWSTER.

> HUMOR dwells with sanity, Truth, and common sense. Humor is humanity, Sympathy intense.

Humor always laughs with you, Never at you; she Loves the fun that's sweet and true, And of malice free.

Humor paints the flying fad, Folly of the day, As it is, the good or bad, In a kindly way.

There behind her smiling mien, In her twinkling eyes, Purpose true is ever seen, Seriousness lies.

Hers the tender mother-touch, Easing all distress; Teaching e'en tho' smiling much; Moulding with caress. 157

THE LIGHT OF LIGHTS

THE City lights are fair to see, And seem to twinkle merrily, To tell of joyous bits of life Amid the turmoil and the strife. Like myriad stars they flash and gleam, A never-ending golden stream, And yet for all their mellow glow They cannot gild the City's woe.

The beacon lights upon the shore Shine brightly all the waters o'er, And guide the sailor on the sea Into the port where he would be. Yet as they flash across the night, Despite their gleaming, golden bright, They call me not, but bid me veer My course from dangers lurking near !

The stars of Heaven brightly shine Athwart the blue, so vast, divine, And whisper of great mysteries In realms man's vision never sees. They stir the soul, and yet I find No messages of any kind That lodgment win within the heart, So far are they and I apart !

The Light of Lights

But there's a light on yonder hill That killeth care, and driveth ill, And haunting fear, whate'er it be, Forth from this human heart of me — The light seen through the window-pane That welcomes me back home again, Where there is one who bids me share The joys of love abiding there !

Ah, Light of Home ! When day is done, And the rest hour hath begun, Of all the lights of land or sea Thou art the fairest light to me ! Dim tho' thou art, still is thy gold The richest treasure life doth hold — It glorifies the blackest zone, And bids the heart come to its own ! WHEN I'm afloat in a cockle-shell, Confronted by the raging swell

Of ocean in a roaring gale, If I'm alone I have no fear Of what awaits, in woe or cheer, If into port or not I sail.

"Tis good to match the might of me Against the raging of the sea,

Whatever be the ultimate; Within my heart and soul to find To fight the wiles of tide and wind A courage eager and elate.

Mine is the loss if loss comes by ! Mine is the bliss of Victory !

Mine is the woe, and mine the gain ! Mine is the joy that comes apace To victors in the stormy race ---

If conquered mine is all the pain !

But when another sitteth near, 'Tis then my heart grows chill with fear.

And dangers looming high appall. The waves with overwhelming height Seem dreadful in their awful might,

As round about they rise and fall.

As to Fear

And tremblingly I run my race,
With frenzied heart, and pallid face,
And darkling terror is my meed —
Not that I fear the raging sea,
But lest a perfect Faith in me
Shall find me wanting in the deed !

THE EVER YOUNG

HE was a mighty pleasant sight, This aged, snowy-headed wight, Who though his knees were badly sprung At seventy was still so young That in his heart still rang the lays He sang back in his boyhood days.

His step was slow, and insecure. His sight was not completely sure, Yet from his eyes a soul looked out He'd ever kept so free from doubt That it was matter small to him To find his vision growing dim.

He'd made a vow back in his youth That come what would of joy or ruth, That come what would of peace or pain, Of days all bright, of hours of rain, He'd use his heart to store away One bit of sunshine every day.

This vow he kept, and year by year He added to his stock of cheer, And strange to say, though it is true, Each stored-up sun-ray doubly grew Until to-day his stores of pelf Are rivals to the sun itself.

The Ever Young

Ah, dear old friend ! What joy to see A wight whose score is seventy, Deep in the winter of his life, So full of light, so free from strife, That in his presence there doth ring The notes of everlasting spring !

١

PLODDIN' ALONG

WORKIN' ahead, jest a-ploddin' along, Payin' no heed to the buffet and blow; Heart in my labor, and soul in my song, Doin' the best thet I can as I go.

Never quite satisfied, allers serene. Tryin' to make each to-day a success. Hopin' to win for my laurel the green Given by some one I've helped in his stress.

Hopin' to win not illustrious fameEchoin' down to the uttermost year,But in the heart of my neighbor a nameCherished, beloved, because of its cheer.

Workin' ahead, jest a-ploddin' along. Careless o' critics, abidin' the test. Fearin' perhaps, but a-hopin' my song Allers 'll show me a-doin' my best !

THE GREENER BAY

HE dipped his pen in golden light, And wrote what lay within his heart, His eyes averted from the night, And never paused to think of art.

He missed the laurel of renown; He failed to win the highest goal, Yet on his brow he wears the crown That comes to him who saves a soul.

For one all heedless of his form, Sunk in the depths of grim despair, Found in his lines a message warm That led to Peace from realms of Care !

THE JOYS OF RHYME

However dark the night, Night rhymes with light !

Despite the clouded sun Sun rhymes with fun !

However sharp the dart Dart rhymes with heart !

However drab the scene Scene rhymes with green !

Despite the wintry day Day rhymes with May !

However great my fear Fear rhymes with cheer !

However harsh the wrong Wrong rhymes with song !

However far the goal Goal rhymes with soul !

Despite the killing pace Pace rhymes with grace ! 166

The Joys of Rhyme

However chill the storm Storm rhymes with warm !

However hard the strife Strife rhymes with Life!

THE SEEING EYE

SMALL things and humble greatest lessons hold, Which to the seeing eye they soon unfold — As on some thorny road my way I pass I get new courage from a blade of grass, Which 'mid the turmoil and the weeds that kill Holds fearlessly its course appointed still.

THE GATEWAY

DEATH somehow doth not seem to be a thing To me of terror and of shuddering, But just a gateway opening upon New fields, new scenes, and new ideas anon — Or if 'tis not, who holds it blessing cheap To lie at rest in peaceful, dreamless, sleep? HE loved his trees, his flowers, and the yields Of lush green meadows, and the harvest fields. The soul within him yearned for paths of peace. His prayer was ever that grim war might cease, That back once more, there in his vernal bowers. He might enjoy the rest of tranquil hours, And train his vines, and till his fertile lands With his own hands: That where the tocsin sounded there might swell The mellow chimes of some cathedral bell To summon man from toil. For warlike spoil He had no temper, yet at Duty's call Wife, home, and flowers, peace and comfort, all He sadly left lest Honor be undone. Nor e'er knew rest again ! O Washington, No crown of gold alight with jewelled sheen Adorns thy brow, but one as fresh and green As were the scenes you loved — the laurel leaf.

The diadem of our Unselfish Chief!

THE BLESSED BLIND

THEY say that Love, poor little Love, is blind. 'Twas Milton's fate to be likewise, and he Deep in his soul the stores of wealth divined That crowned his brow with Immortality.

So Love, of sight bereft, with eyes of Soul Still wends his way, and serves his Godlike part, And age on age leads mortals to the goal Where lie the richest treasures of the heart !

TO MARK TWAIN

On His Seventieth Birthday

HERE'S to the Prince of Wits! Here's to his Seventy Years ! Time, the fugacious, flits Over this vale of tears. Yet never a mark leaves in its train To dimmer the loyal love for Twain In the warp and woof of the hearts of those Whose sorrows and woes. Whose trials and pain. Have vanished like smoke into thinnest air 'Neath the magic touch of his genius rare ! God give him power For every hour Of peace he has brought where storm-clouds lower ! God give him a day For every ray Of light he has shed on sorrow's way! God give him a year For every fear His blithesome spirit has turned to cheer. And his Seventy Years will straightway be But the end of a promising infancy !

THE AFFINITIES

I KNOW, my Heart, that in some far-off age Before this world sprang from chaotic strife Both you and I, on some primeval stage, Together faced the woes and joys of life.
Not two, but one, were we back there in space When You were I, and I was You, in truth, Through chaos rushing in the seething race In union blest as now are Love and Youth !

I know it as I know on this rare night That yonder stars, that coruscate on high,
Are fair to see, and with their golden light The arching vault of heaven glorify.
I know it as I know that love is sweet. "Tis sure to me as that the sun will rise
And on the morrow once again will greet The dawning day with hints of Paradise !

I knew it when first on this joyous earth We met, and felt again the wondrous thrill
With which Love weaves the moment of rebirth Of something lost in far-off days of ill.
"Twas like a coming home to one whose days In wandering and weariness were spent,
To find amid the once accustomed ways A perfect bliss, and unalloyed content.

TO THE MUSE IN AUTUMN

AWAKE, O Muse, from this dull lethargy Of doleful thoughts to sweet reality ! The Autumn spells not death as thou dost say; 'Tis not the harbinger of drear dismay, Forebodings dark, reflections dire and sad, But fitting time for themes all gay and glad! 'Tis twilight of the year, the eventide ---The time for hearth-stones, genial and wide; The time when blazing logs begin to weave Their wondrous spells for weary ones at eve, When at the earlier setting of the sun. They pause at last from labors nobly done; Refreshment time that fitly leads us on To dreamy hours of rest that come anon. Awake ! Be glad ! Give doleful thoughts surcease, And sing the Joys of Twilight and of Peace !

CUI BONO?

SUCH wondrous Faith in my own powers have I That I can move a mountain if I choose. But that's a task I don't intend to try. I love to have the mountain standing by, With paths to lead me nearer to the sky — So what's the use ?

SHAKESPEARE'S BIRTHDAY

To-DAY was Shakespeare born ! Upon a day like this it must have been : A golden morn, Fields decked in vernal green ; The birds full-throated sound their songs of glee And with one voice Rejoice ; A wondrous glory rests upon the sea, The whiles The heavens are all smiles, And earth doth wear A jocund air, And all is glad and gay — The Muses' greatest son was born to-day !

AS TO THE LAW

WHAT volumes of immensity To hold Man's Statutes do we see ! A never-ending list of Musts To curb our universal lusts ! And Shalts and Shalt Nots, tiers on tiers, As endless as the eternal years !

So fraught are these with tricksy phrase, In warp and woof so shot with haze On every side are Sages seen Perplexed to tell us what they mean — Each Hall of Justice is a hive Of bees that on Contention thrive.

What woeful work is thine, O Man, To weave so vast a legal span To bridge the troubles that intrude ! What impudent ineptitude, When God, who knew the needs of Men, Put all His Law in Statutes Ten !

'TWIXT FACT AND FANCY

OFTTIMES as through some forest glade My step hath strayed, And I observe the beauties of the scene : The bowers soft and green, Wherein some elfin band perchance hath played; Or where the wood-nymphs dwell, And weave their fairy-spell; While here and there a glint of sun shines down, And penetrates its leafy crown, And from the upper hills, The music of the rills, Entrancing, clear, Enchant the ear, I wonder where, deep-hid from mortal eyes, The fine-spun line 'twixt fact and fancy lies ?

MUSIC

WHEN things go wrong I find it helps along To pause and sing some pleasant little song.

When things go right It adds to my delight Again to give those tuneful measures flight.

Sunshine, or rain, 'Tis Music's mission plain To add to joy and take away from pain!

THANKSGIVING DAY

FOR all the gracious gifts in harvests fair
In things material whose goodly share

I richly prize;

For man's abundant wealth that lies in sight,
And for the sense of power and of might
With which to meet my foe, and fight the fight,

My thanks arise.

But for the richer gifts of Love and Peace That bring the soul a sense of sweet release From pressing care; For mercies shown; for greater growth of soul; For light when clouds of deadly dark uproll

To point the way to some more lofty goal, And lead us there;

For broader human sympathy; for tears Of Brotherhood to ease another's fears, And cheer his way; For seeing eyes; and shoulders fit to bear The burdens of our fellows in despair, And right good will to help them in their care When times are gray; 180

Thanksgiving Day

For men of heart and soul inclined To honors of a lowlier, meeker kind, With grace endued; Who seek all dire injustices to mend, To guide the hopeless to some hopeful end, Not this alone, but all my days, I spend In gratitude !

SERVICE

To serve another's WILL — That's not for me ! My heart is not athrill For slavery.

To serve another's NEED Right heartily, In thought, and word, and deed — That's liberty !

JOY SHARING

WITH all the joys that everywhere abound, In earth, in sky, on sea, in vibrant air,Where God's great gifts are in abundance found, What pity 'tis all men have not their share !

God grant that 'mid these gifts that fall to me, In all the plenteous stores that on me press, May come an eye my Brother's lack to see And will to share with him my plenteousness!

REPAYMENT

April 4th, 1913.

Mx son, who's twenty-five years old to-day,
Hath not forgot his old-time, boyish way
Whene'er we meet, despite his mannish pride,
Of snuggling down contented at my side.
He kisses me with an affection true
Just as in childhood he was wont to do;
And as he gained in days that used to be
A blessed sense of his security,
And felt himself protected from all harms
Within his Father's arms,
So I by his caress with strength endued

So I by his caress with strength endued Find my own confidence in self renewed, And go forth stronger for what lies ahead, Be it of good, or be it aught of dread. I gave him of my Manhood; he, in truth, Now in my Age repays the gift in Youth !

MY CREED

IN building up my Creed To help me in my trials
The things that most I heed Are not the vain denials
That occupy the mind Of Critics most devout,
Negations of a kind That do but strengthen Doubt.

But rather Truths that rise Whatever clouds uproll, Eternal as the skies, To satisfy the Soul — The Affirmations of A God in all I see, Whose never-failing Love Commands my fealty. Now come the Christmas chimes to summon me From sluggish ease and cynic thoughts of doubt
To deeds of kindly Opportunity That on all sides of us now lie about;
To spread the Gospel of Good Will to all, To sing the songs of Peace upon the mart,
And fill with spirit of high festival To overflowing every human heart.
To carry hope to hopeless ones, and ease The sufferings of grievous helplessness;
To carry joy to those whose miseries Have plunged them in a maelstrom of distress;
To lavish Light on Darkness, drying tears; To enter into homes of them that grieve,

And with the touch of sympathy the fears

Of brothers in affliction dread relieve.

That is the song those Christmas chimes ring forth ! That is the summons sent to those who hear,

Borne on the crispy air from out the north

Upon this morn so thrilling in its cheer.

Let him who hath of his possessions spend

Not stores of gold, but Love in fullest play — He wins the greatest treasure in the end

Who Lives as well as Gives his Christmas Day!

GETTYSBURG FIFTY YEARS AFTER

Ι

"Tis fifty years, my Brother, since on that fatal day, Confronting one another in grim war's dread array, The Gray and Blue with courage true Met on this field for deeds of rue, To slaughter and to slay!

- Hate filled our eyes then, Brother, and rage enthralled each heart —
- A rage that naught could smother, and drove us mad, apart.

Each fought for right as right he knew,

^tAnd as we fought our madness grew,

And poisoned every dart.

Blood-lust was on us, Brother. We writhed beneath its spell,

And sons of the same mother beneath its madness fell. We maimed, and lamed, and blindly slew — Each did the deed he had to do Nor knew that it was Hell !

> The skies grew lurid overhead, As shot and shell with carnage dread 187

Gettysburg Fifty Years After

Their sanguinary horrors spread, And scarlet grew the meadows green, And great streams babbled o'er the scene, And every stream was red !

п

- To-day we meet again, Brother, upon that self-same field.
- Forgot is every pain, Brother, in newborn Love revealed.

The Blue and Gray, in glad array,

Stand face to face as on that day,

And every wound is healed !

The madness of the fray, Brother, the blindness of the fight,

Like to that dreadful day, Brother, have faded in the night,

And hand in hand the Spirit band

As well as we together stand,

Together face the Light!

E'en as the blood we shed, Brother, the blood of warriors true

In one stream mingled red, Brother, and sped thence to the blue,

All blent in blessed unity,

So in a Union blest run we

To face what we've to do!

Gettysburg Fifty Years After

111

Gone is the rage that filled our hearts. Gone is the hate that dulled our eyes, And here where flew envenomed darts The Palm of Peace Fraternal lies. Where Brother once his Brother slew, And grim war dimmed the skies above, Once more we come, the Gray, the Blue, To hold a Festival of Love!

PROFIT AND LOSS

HERE are the treasures I have won: A sense of Duty sometimes done: A pleasing taste of present fame; The goodly solace of a name That men speak well of here and there; And gold enough to banish care; A place in the community Wherein my neighbors speak of me As one who's made use of his days In doing good in divers ways; Who has not wasted fleeting hours. Nor idly spent his stock of powers On things of trivial intent; A retrospect of shadows blent With many a vista flashed with gold, In which rare scenes of bliss unfold And turn to jewels e'en the tears That dimmed the eyes in yesteryears.

The cost has been the loss of skies That promised many a noble prize; The loss of spring-time in the heart, Of Youth the all-essential part; The loss of eagerness to meet The unknown perils of the street; 190

Profit and Loss

The dimming of Ambition's light; A greater sense of coming night; The loss of thrilled expectancy When thinking on what is to be; On what to-morrow holds in store Upon its dark untrodden shore; The loss of dreams of deeds to do; The love of all things strange and new — All these possessions rare are lost, Forever gone to swell the cost Of life and all the hard-won bays That crown me in my latter days.

The balance? Strike it if you will. Find it of good. or find it ill -I vex me not with balances To see if loss or profit is. I've joyed in joys, and grieved in tears. The light and shadow of the years Have kept me ever in their reach. As night and day each follows each. Great happiness and woes have come. Like summers fair and winters numb. Great peace has filled my soul, and strife Has had its portion of my life, And as I draw nigh to the end. And think of enemy and friend, Of helpmate fair, of bliss and grief. Of flowers dead, and buds in leaf,

Profit and Loss

Of troubles, trials, blessings, gifts; Of plans, ambitions, failures, shifts, I would not cast the balance up If sweet or bitter be the cup, But am content, whate'er befall — I'm grateful to have lived at all !

ON A RAINY DAY IN A LIBRARY

WHEN falls the gentle summer rain, And caution bids us stay within,
I vex me not with thoughts of pain That I may not the hillsides win;
That I may not the country roam At will, and speed o'er hill and dale,
But rest contentedly at home With stores of wealth that never fail.

A miner I become, and here Surrounded by vast lodes of thought, Great messages in woe or cheer From out recesses hid are brought — A nugget now of Wisdom's gold From Sages past perhaps I find, Or possibly some ledge will hold Soul-metal of some rarer kind.

Would I commune with lyric bird In glowing ecstasies of song? Here are the Poets' numbers heard That to the heavenly choir belong. The songs that tell of youthful dreams; The songs that sing undying love, And through the cloud-rifts grant us gleams Of our immortal treasure-trove o 193

On a Rainy Day in a Library

Or do I seek adventure swift. Some knightly deed of prowess rare, Mine eve to otherward I shift t And that I seek awaits me there ----The heroes of a doughty age, Greece, Rome, or mediæval France, Wait on the turning of some page In tourney bold, or courtly dance. Their loves, their hates, I share them both. In perils I am at their side. When war's afoot I'm nothing loath To mount and forth to battle ride; And when some feat of arms is done By Cavalier for Ladye Fayre, The smiling prizes nobly won Are mine as well as his to share.

On enterprise of pirate sort, Again, I freely may embark, Nor later fear the ill-report That follows bloody deeds and dark; But fearless of all consequence To life, or limb, or good-repute, I join in the incontinence Of shambles for the sake of loot.

Or be my mood of nobler cast, And wider, stranger worlds my quest, 194

On a Rainy Day in a Library

Before, or eke behind, some mast I seek discovery with the best — Columbus, Ponce, De Soto — all The heroes of a valiant mould Within some cover wait my call To do again the deeds of old.

Or best of all, if so I will

To seek a more ennobling zone, And walk with men inspiring still,

The greatest souls the world hath known, From all the list of truly great

'Tis mine to choose my company; To join them in their gloried state, Or share their grim Gethsemane.

When falls the gentle summer rain, And caution bids us stay within,
I vex me not with murmurs vain That I the hillsides may not win;
But here within these quiet nooks, Content as Omar 'neath his vine,
I roam through my belovéd books, And all the universe is mine. In the code of Wireless Telegraphy the letters S.O.S. are the signal of Distress.

> "S.O.S.1 S.O.S.1" Comes the signal of distress Everywhere we list we hear Some one sounding in his fear, "S.O.S." If it happen on the sea Instantly Comes the answer, ringing clear, "Hold your spirits full of cheer! We are hastening o'er the wave, And will save ! Hidden in the misty haze Of dread ocean's stormy ways We will find you and extend Helping hand unto the end; Hand to lift you safely o'er Raging waters to the shore. Keep your courage undismayed ! Let your hearts rest unafraid — We have heard your cry of fear Ringing through the atmosphere, And with loving eagerness O'er the waters on we press, Answering your S.O.S. !"

S.O.S.

If it happen on the land Where is then the helping hand? From the homes of penury, From the vales of misery, From the lair of sodden grief Comes the pleading for relief, "S.O.S. ! S.O.S. ! Help us in our helplessness — S.O.S. !" Sounding daily in our ears From the haunts of human tears, Echoing on every side From the ever-rising tide Comes the call for tenderness — "S.O.S. !"

Grinding chance, and human ills; Shattered hope that numbs and kills; Human derelicts are there, Sinking, sinking, in despair,

To the grave; In their awful loneliness, Crying, sobbing, "S.O.S.! Come in charity to save!

From the spring Of thy blessings haste to bring Comfort to the comfortless — S.O.S. ! S.O.S. !" Women, children, in the crush, Trampled in the maddened rush, 197

S.O.S.

For some bare necessity Cry aloud incessantly, In their groaning wretchedness, "S.O.S. !"

Here's a human soul beset In the purlieus of regret — Tangled up, enmeshed within Webs of Sin — Hear his signal of distress ! Hear his wailing S.O.S. ! "Hasten ye ! Save me from this beggary — Beggary of soul and heart ! I, alas, have lost my chart, And am drifting o'er the sea To the ports of slavery Ransomless —

S.O.S. 1 S.O.S. 1

Round my soul the waters rise Shutting out the blue of skies; Shutting out the Father's face In the fathomless disgrace — Will ye leave me in my stress Fatherless?

Leave me not unto this fate ! Come before it is too late — Ere a human soul shall sink, Slipping, slipping, o'er the brink, 198

In the snare Of despair. Lost for aye to righteousness -S.O.S. 1 S.O.S. 1" O the signals ! O the calls ! Flashing o'er these city walls From the realms of ugliness That upon us ever press With their pleading S.O.S. ! Cries of children in despond -Motherless ! To the helping hands beyond -"S.O.S. !" Pleading ever for release ! Pleading for one taste of peace ! Little ones that blindly grope In a hopeless quest for hope ! Pleading for a sure relief From the waves of sin and grief! Human vessels, one and all, Sending out their piteous call — Shall they find us pitiless. When they sound their S.O.S.? Do we heed them? Do we list To those voices in the mist On the land? Have we lent the helping hand To our Brothers in despair

Everywhere?

S.O.S.

Do we send them words of cheer. Bidding them forget their fear, With a message sounding clear — "Hold your courage undismayed ! Keep your spirits unafraid ! We are hastening o'er the wave, And will save ! We will come in Brotherhood. And our boats are staunch, and good, Laden deep with Love and Hope For the weary souls that grope In the sea Of despair and misery — Laden deep with tenderness, Bringing comfort in your stress, Answering your S.O.S. !"

THE following pages contain advertisements of recent important poetry.

IMPORTANT BOOKS OF POETRY

Three New Books By JOHN MASEFIELD

SALT WATER BALLADS

Cloth. 12mo. \$1.00 net. Postpaid \$1.10.

"Masefield has prisoned in verse the spirit of life at sea."-New York Sun.

A MAINSAIL HAUL

Cloth. 12mo. \$1.25 net. Postpaid \$1.36.

"There is strength about everything Masefield writes that compels the feeling that he has an inward eye on which he draws to shape new films of old pictures. In these pictures is freshness combined with power."-New York Globe.

THE TRAGEDY OF POMPEY

Preparing.

A vigorous, vivid and convincing play, in the virile and impressive vein associated with Mr. Masefield's striking poetic gifts.

PUBLISHED BY

THE MACMILLAN COMPANY

64-66 Fifth Avenue

New York

IMPORTANT BOOKS OF POETRY

New Editions of JOHN MASEFIELD'S Other Works

THE DAFFODIL FIELDS

Second Edition. \$1.25 net.

"Neither in the design nor in the telling did, or could, 'Enoch Arden' come near the artistic truth of 'The Daffodil Fields.'"—Sir QUILLER-COUCH, Cambridge University.

THE STORY OF A ROUND-HOUSE, AND OTHER POEMS

New and Revised Edition. \$1.30 net.

"The story of that rounding of the Horn! Never in prose has the sea been so tremendously described."— Chicago Evening Post.

THE EVERLASTING MERCY and THE WIDOW IN THE BYE STREET

(Awarded the Royal Society of Literature's prize of \$500.)

New and Revised Edition. \$1.25 net.

"Mr. Masefield comes like a flash of light across contemporary English poetry. The improbable has been accomplished; he has made poetry out of the very material that has refused to yield it for almost a score of years."— Boston Evening Transcript.

PUBLISHED BY

THE MACMILLAN COMPANY 64-66 Fifth Avenue New York

By

WILFRID WILSON GIBSON

Daily Bread

New Edition. Three volumes in one. Cloth, 12mo. \$1.25 net.

"A Millet in word-painting who writes with a terrible simplicity is Wilfrid Wilson Gibson, born in Hexham, England, in 1878, of whom Canon Cheyne wrote: 'A new poet of the people has risen up among us.' The story of a soul is written as plainly in 'Daily Bread' as in 'The Divine Comedy' and in 'Paradise Lost.'"—The Outlook.

Fires

Cloth. 12mo. \$1.25 net.

"In 'Fires' as in 'Daily Bread,' the fundamental note is human sympathy with the whole of life. Impressive as these dramas are, it is in their cumulative effect that they are chiefly powerful."—*Atlantic Monthly*.

Womenkind

Cloth. 12mo. \$1.25 net.

"Mr. Gibson is a genuine singer of his own day and turns into appealing harmony the world's harshly jarring notes of poverty and pain."—*The Outlook*.

PUBLISHED BY

THE MACMILLAN COMPANY 64-66 Fifth Avenue New York

Bu HERMANN HAGEDORN POEMS AND BALLADS

Cloth. 12mo. \$1.00 net "His is perhaps the most confident of the prophecies of our new poets, for he has seen most clearly the poetry in the new life. His song is full of the spirit of youth and hope.... It is the song that the new century needs. His verse is strong and flexible and has an ease, a naturalness, a rhythm that is rare in young poets. In many of his shorter lyrics he recalls Heine."-Boston Transcript.

By FANNIE STEARNS DAVIS MYSELF AND I Cloth. 12mo. \$1.00 net

"For some years the poems of Miss Davies have attracted wide attention in the best periodicals. That note of wistful mysticism which shimmers in almost every line gives her art a distinction that is bound to make its appeal. In this first book—where every verse is significant—Miss Davis has achieved very beautiful and serious poetry."

-Boston Transcript.

By JOHN HELSTON APHRODITE AND OTHER POEMS

Cloth. 12mo. \$1.25 net.

This book introduces another poet of promise to the verse-lovers of this country. It is of interest to learn that Mr. Helston, who for several years was an operative mechanic in electrical works, has created a remarkable impression in England where much is expected of him. This volume, characterized by verse of rare beauty, presents his most representative work, ranging from the long descriptive title-poem to shorter lyrics.

PUBLISHED BY

THE MACMILLAN COMPANY 64-66 Fifth Avenue New York

THE WORKS OF RABINDRANATH TAGORE

Nobel Prizeman in Literature, 1913

GITANJALI (Song Offerings). A Collection of Prose Translations made by the author from the original Bengali \$1.40 net THE GARDENER. Poems of Youth \$1.25 net THE CRESCENT MOON. Child Poems. (Colored Ill.) \$1.25 net SADHANA: THE REALIZATION OF LIFE. A volume of essays \$1.25 net

All four by Rabindranath Tagore, translated by the author from the original Bengali.

Rabindranath Tagore is the Hindu poet and preacher to whom the Nobel Prize was recently awarded. . . .

I would commend these volumes, and especially the one entitled "Sadhana," the collection of essays, to all intelligent readers. I know of nothing, except it be Maeterlinck, in the whole modern range of the literature of the inner life that can compare with them.

There are no preachers nor writers upon spiritual topics, whether in Europe or America, that have the depth of insight, the quickness of religious apperception, combined with the intellectual honesty and scientific clearness of Tagore. . .

Here is a book from a master, free as the air, with a mind universal as the sunshine. He writes, of course, from the standpoint of the Hindu. But, strange to say, his spirit and teaching come nearer to Jesus, as we find Him in the Gospels, than any modern Christian writer I know.

He does for the average reader what Bergson and Eucken are doing for scholars; he rescues the soul and its faculties from their enslavement to logic-chopping. He shows us the way back to Nature and her spiritual voices.

He rebukes our materialistic, wealth-mad, Western life with the dignity and authority of one of the old Hebrew prophets. . . .

He opens up the meaning of life. He makes us feel the redeeming fact that life is tremendous, a worth-while adventure. "Everything has sprung from immortal life and is vibrating with life. LIFE IS IMMENSE."... Tagore is a great human being. His heart is warm with love.

His thoughts are pure and high as the galaxy.

(Copyright, 1913, by Frank Crane.) Reprinted by permission from the New York Globe, Dec. 18, 1913.

THE MACMILLAN COMPANY

Publishera

64-66 Fifth Avenue

New York

•

¥

,

.

è

